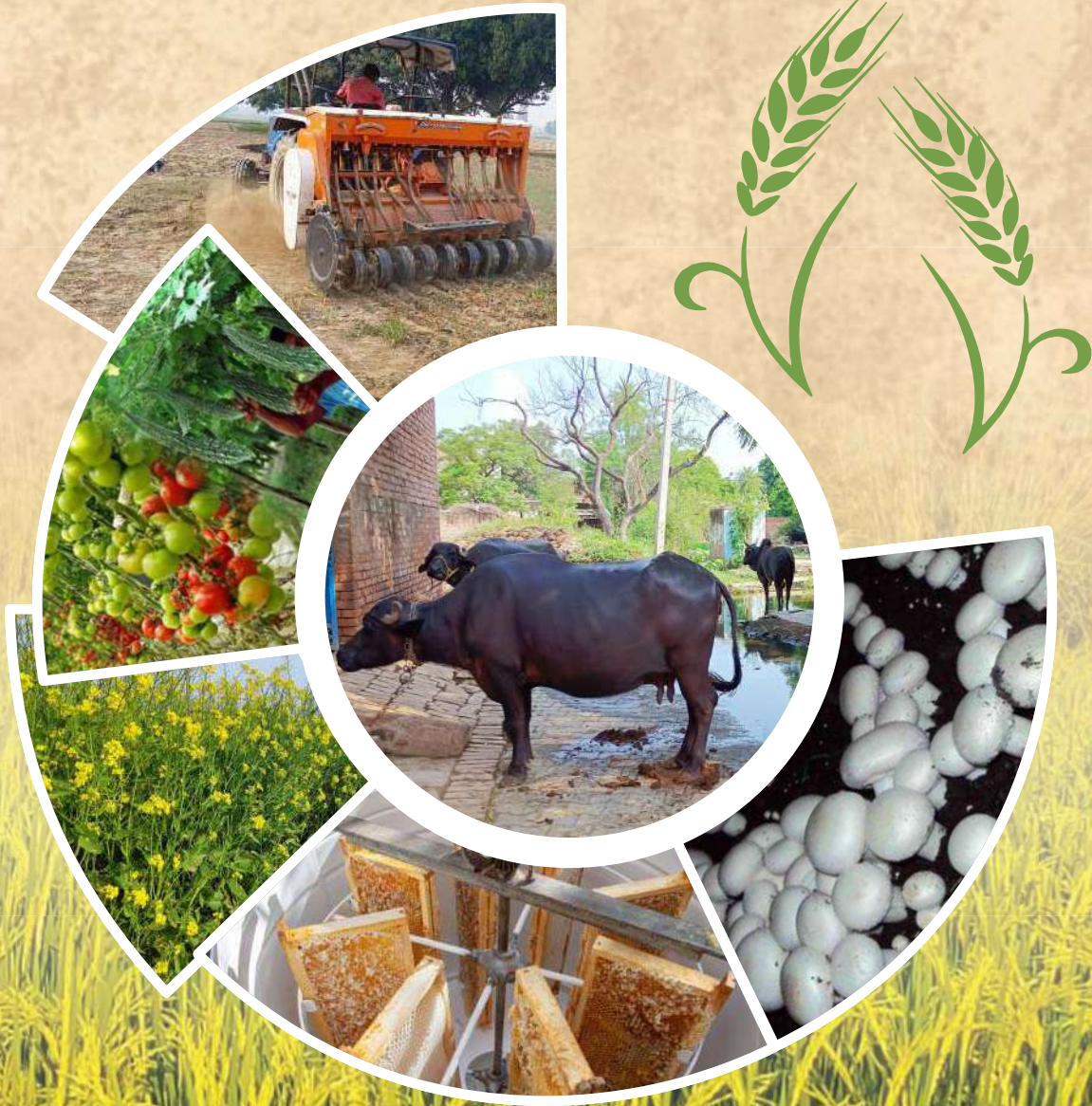




कृषक नवाचार : एक पहल



प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर-2

कृषक नवाचार : एक पहल



प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर-2

संरक्षक

डा. आनंद कुमार सिंह
कुलपति

संकलन एवं सम्पादन

डा. आर. के. यादव
डा. वी. के. कनौजिया
डा. भूपेन्द्र कुमार सिंह
डा. विनोद प्रकाश

तकनीकी सहयोग

समस्त कृषि विज्ञान केंद्र

टंकण

श्री राम प्रसाद एवं श्री विनोद कुमार यादव

प्रकाशन : 2024

© चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

सन्दर्भ :

डा. आर. के. यादव, डा. वी. के. कनौजिया, डा. भूपेन्द्र कुमार सिंह एवं डा. विनोद प्रकाश 2024
कृषक नवाचार : एक पहल, प्रसार निदेशालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
कानपुर, पृष्ठ—50

प्रकाशक:

प्रसार निदेशालय
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर



सन्देश

कृषि प्रदेश की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार है। उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा (जनसंख्या के आधार पर) राज्य और क्षेत्रफल की दृष्टि के आधार पर चौथा सबसे बड़ा राज्य है। कृषि क्षेत्र देश की 42.3 प्रतिशत आबादी को आजीविका प्रदान करता है और मौजूदा कीमतों पर देश की जीडीपी में 18.2 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। राज्य में शुद्ध खेती योग्य क्षेत्रफल 164.17 लाख हेक्टेयर है।

प्रदेश की दो तिहाई आबादी गांवों में निवास करती है, जिनकी जीविका खेती एवं उससे जुड़े अन्य कार्यों पर निर्भर है। ऐसे में कृषकों को आधुनिक खेती हेतु कम लागत के कृषि निवेश, तकनीकी एवं बाजार ससमय उपलब्ध कराना उ0प्र0 सरकार की प्राथमिकता है।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी, महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल एवं मा0 मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी का संकल्प किसानों को आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बनाने की है। गाँवों में स्वरोजगार सृजन करके गाँव में ही लोगो को रोजगार देना एवं कृषि में विविधता लाना है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र दृढ़ संकल्पित हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र नवोन्मेषी कृषि तकनीक उपलब्ध कराने, किसान उत्पादक संगठन एवं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से कृषकों के सामाजिक एवं आर्थिक उच्चीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिसके लिए प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा केंद्र पर स्थापित विभिन्न इकाईयों, क्रॉप कैफेटेरिया, तकनीकी पार्क, प्राकृतिक खेती, बीज उत्पादन, इत्यादि तथा गांव में कृषि, बागवानी, पशुपालन, शाकभाजी उत्पादन, पोषण वाटिका पर प्रशिक्षण, प्रदर्शन, प्रक्षेत्र सलाहाकार सेवाओं, डायग्नोस्टिक भ्रमण तथा एक्सपोजर विजिट एवं अन्य प्रसार गतिविधियों द्वारा कृषकों की आमदनी को दोगुना करने के लिए ठोस प्रयास किये जा रहे हैं।

हर्ष का विषय है कि चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के द्वारा विभिन्न जनपदों में नवीनतम कृषि तकनीकी के प्रयोगों से अधिक उपज से अधिक आय प्राप्त करने वाले किसानों की सफलता की कहानी का संकलन कर एक पुस्तिका **“कृषक नवाचार : एक पहल”** के रूप में प्रसार निदेशालय द्वारा प्रकाशित की जा रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तिका कृषक बन्धुओं, कृषि उद्यमियों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तिका के प्रकाशन हेतु मैं डा0 आर0 के0 यादव एवं सहयोगी वैज्ञानिकों को बधाई देता हूँ।

(आनंद कुमार सिंह)



प्राक्कथन

कृषि हमारे देश और प्रदेश की अर्थव्यवस्था का आधारभूत स्तंभ है और हमारे जीवन का आधार है। अनादि काल से कृषि ने ही हमें आर्थिक व सामाजिक शक्ति प्रदान की है। देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपने जीविकोपार्जन हेतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। सबसे अधिक कृषक परिवार उत्तर प्रदेश में हैं जहां 1.77 करोड़ परिवार कृषि से जुड़े हैं। प्रदेश का देश के खाद्यान्न उत्पादन में 20 प्रतिशत का योगदान है और यह प्रथम स्थान पर अवस्थित है। समय के साथ और विज्ञान के प्रादुर्भाव के कारण कृषि पर आर्थिक निर्भरता जरूर कुछ कम हुई है परन्तु स्वास्थ्य और बढ़ती कृषि लागत एवं घटती कृषक आय, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण एवं दूषित होना, स्थिर उत्पादकता एवं मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव, वर्तमान में प्रचलित कृषि पद्धति के दुष्परिणाम के रूप में परिलक्षित होने लगे हैं जिस कारण पर्यावरण को लेकर हमारी चिन्ताएं अब और अधिक बढ़ गई हैं। वैश्विक भुखमरी सूचकांक (2022) में भारत का 121 देशों की तुलना में 107वां स्थान एवं भुखमरी स्कोर 29.1 है जो भयंकर भुखमरी के स्तर को दर्शाता है। अतः उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है की जहाँ विश्व से भुखमरी एवं कुपोषण को वर्ष 2030 तक समाप्त करने के लक्ष्य का पीछा कर रहे हैं वो कहीं हमसे और दूर तो नहीं हो रहा है? जिसके समाधान के लिए विश्वविद्यालय के अधीन संचालित सभी 15 कृषि विज्ञान केन्द्र, केंद्र एवं राज्य सरकार के नीतियों के अनुरूप किसानों की पोषण सुरक्षा एवं आय में वृद्धि के लिए प्रदर्शन, प्रशिक्षण तथा जागरूकता कार्यक्रमों इत्यादि का आयोजन कर रहे हैं। रासायनिक उर्वरकों एवं जीवनाशियों का प्रयोग अधिक होने के कारण पर्यावरण प्रदूषण एवं मृदा में पोषण तत्वों का असंतुलन बढ़ रहा है जिसको ध्यान में रखकर कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों आदि के माध्यम से किसानों को प्राकृतिक/जैविक खेती अपनाने हेतु प्रशिक्षित एवं जागरूक किया जा रहा है। उन्नत कृषि तकनीकों का विकास, कृषि के ढाँचागत विकास कार्यक्रम तथा किसानों की सजगता से कृषि उत्पादन में सतत् वृद्धि हुई है।

कृषि को लाभदायक बनाने में नई तकनीकों के विकास एवं प्रसार में विश्वविद्यालय ने अहम भूमिका निभाई है। छोटे एवं मझले किसानों के लिए उन्नत कृषि तकनीकों के माध्यम से आय बढ़ाने तथा सतत् आजीविका के संसाधन विकास में राज्य सरकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली तथा केन्द्रीय परियोजनाओं के सहयोग से विश्वविद्यालय विभिन्न कार्य कर रहा है। "कृषक नवाचार : एक पहल" का प्रकाशन, कृषकों को कृषि में नवाचार द्वारा आजीविका में वृद्धि व उद्यमिता विकास पर जानकारी देने की दिशा में एक प्रयास है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय द्वारा इस विशेष अंक के प्रकाशन हेतु मार्गदर्शन का अवसर प्रदान करने के लिए हम उनके आभारी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है की पुस्तिका में संकलित की गई जानकारी कृषक बन्धुओं, प्रसार कार्यकर्ताओं एवं कृषि स्नातक एवं परा स्नातक छात्रों के लिये विशेष उपयोगी होगी।

(आर० के० यादव)

अनुक्रमणिका

फूल उत्पादन आर्थिक समृद्धि का साधन	1
टिशू कल्चर द्वारा आलू बीज उत्पादन	2
प्राकृतिक खेती से उन्नति एवं समृद्धि	3
प्राकृतिक खेती से सफलता की कहानी	4
कृषि के साथ पशुपालन से आय वृद्धि	5
खेती के साथ पशुपालन समृद्धि का आधार	6
वर्मी कम्पोस्ट जैविक खेती एवं समृद्धि का आधार	7
पपीता एवं गेंदा की खेती से समृद्धिशाली किसान	8
मधुमक्खी पालन समृद्धि का साधन	9
प्राकृतिक खेती एवं मोटा अनाज की खेती से उन्नति	10
नवीनतम तकनीकी से समृद्धि एवं आय में वृद्धि	11
बकरी पालन उन्नति का साधन	12
खेती के साथ पशुपालन आय वृद्धि का साधन	13
कृषक तकनीकी एवं पशु पालन से आय में वृद्धि	14
नियमित आय हेतु बकरी पालन एवं नेपियर उत्पादन	15
जैविक हल्दी से आय में वृद्धि	16
कृषि विविधीकरण से आय वृद्धि	17
बागवानी से आर्थिक समृद्धि	18
अन्तः फसल उत्पादन से आय वृद्धि	19
मधुमक्खी पालन लाभकारी व्यवसाय	20
मौसम सम्बन्धी सलाह सेवाओं से लागत में कमी एवं उत्पादन वृद्धि	21
खेती के साथ पशुपालन समृद्धि का साधन	22
खेती के साथ पशुपालन समृद्धि का साधन	23
खेती के साथ एग्री—बिजनेस	24
जायद संकर मक्का की नवीनतम तकनीकी से समृद्धि	25
फसल चक्र एवं फसल प्रबन्धन द्वारा कृषक आय में वृद्धि	26

मूँगफली एवं सब्जी मटर से समृद्धि	27
प्याज की खेती से आत्मनिर्भर हुये किसान	28
गेहूँ में पोषक प्रबन्धन से मिला लाभ	29
फूलगोभी की खेती से आय वृद्धि	30
खेती एवं मधुमक्खी पालन से आय वृद्धि	31
वैज्ञानिक खेती से समृद्धि	32
वैज्ञानिक खेती से आर्थिक उन्नति	33
सरसों की खेती से कृषक समृद्धि	34
सब्जी उत्पादन से आय में वृद्धि	35
सब्जी उत्पादन से आर्थिक उन्नति	36
कृषि में यंत्रीकरण से सफलता	37
सब्जी उत्पादन से आर्थिक समृद्धि	38
पशुपालन: आर्थिक उन्नति का साधन	39
प्रसंस्करण द्वारा आय में वृद्धि	40
पोषण वाटिका, पशुपालन एवं मशरूम से आय में वृद्धि	41
पोषण वाटिका एवं उन्नत तकनीक द्वारा आय वृद्धि	42
पोषक वाटिका के साथ एकीकृत फसल प्रबन्धन उन्नति का साधन	43
दुग्ध उत्पादन से आर्थिक उन्नयन	44
बेमौसम सब्जी एवं फल उत्पादन से आर्थिक समृद्धि	45
खेती के साथ पशुपालन से आय में वृद्धि	46
मशरूम उत्पादन लाभ का साधन	47
पशुपालन से कृषक की बढ़ी आमदनी	48
पशुपालन से समृद्ध हुआ किसान	49

फूल उत्पादन आर्थिक समृद्धि का साधन

कृषक का नाम	:	श्री इन्द्रजीत सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री केदार सिंह
ग्राम	:	माधौनगर
विकास खण्ड	:	छिबरामऊ
जनपद	:	कन्नौज
मोबाइल नंबर	:	9453977185



श्री इन्द्रजीत सिंह, ग्राम— माधौनगर, कन्नौज के प्रगतिशील कृषक हैं। इनके पास कुल 1.20 हे० कृषि योग्य भूमि है जिस पर यह 2020 के पूर्व परम्परागत विधि से अगेती आलू, गेहूँ, आलू, धान, जायद मक्का, उर्द, मूंग एवं ग्लैडियोलस की खेती करते थे तथा दुग्ध हेतु गाय एवं भैंस का पालन करते थे। जिससे इन्हें प्रति वर्ष रु० 544730 एवं रु० 56600 की शुद्ध आय क्रमशः फसल उत्पादन एवं पशुपालन से प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण : श्री सिंह वर्ष 2020 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तत्पश्चात इन्हें ग्लैडियोलस, अगेती आलू, गेहूँ, आलू, धान, हरी खाद, जायद मक्का, उर्द, मूंग फसलों की नवीनतम प्रजातियों एवं उन्नत तकनीकों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया साथ ही नवीनतम तकनीकियों एवं प्रजातियों का प्रदर्शन भी इनके प्रक्षेत्रों पर कराया गया तथा खरीफ मौसम में परती के स्थान पर हरी खाद (ढेंचा) के प्रयोग के बारे में भी जानकारी प्रदान की गयी जिसको उन्होंने अपने खेतों पर वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में लगाया। फसलों में रोगों के नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा एवं जैव कीटनाशियों को भी उनके प्रक्षेत्र पर प्रदर्शित कराया गया।



तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : श्री इन्द्रजीत सिंह वर्ष 2019–20 ग्लैडियोलस, अगेती आलू, गेहूँ, आलू, धान, जायद मक्का, उर्द, मूंग फसलों से रु० 601330 की शुद्ध आमदनी प्राप्त कर रहे थे। कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद एवं प्रशिक्षण में भाग लेने से प्रेरणा प्राप्त कर उन्नत कृषि तकनीकी अपनाने के साथ-साथ कृषि विविधीकरण के आयाम उन्नत प्रजातियों का कृषि में प्रयोग एवं पशुपालन के साथ वर्ष 2023–24 में 966335 शुद्ध आय प्राप्त हुई।

अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : ग्लैडियोलस के उत्पादन में अन्य किसानों द्वारा बल्ब सड़ने की समस्या का समाधान कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण एवं प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों के माध्यम से कराया गया। इस समय प्रेमपुर, माधौनगर, मलिकापुर, टड़ा, मटैना, रकरा, नगला बाउरी, हरकरनपुर, सराय गोपाल में लगभग 100 एकड़ क्षेत्रफल में ग्लैडियोलस की खेती हो रही है।

कृषक प्रतिक्रिया : खेती व पशुपालन के साथ-साथ पुष्प उत्पादन से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हुई। अधिक उपज वाली नवीन प्रजातियों का प्रयोग करने लगे। कृषि विज्ञान केन्द्र से सीधे जुड़ने से आमदनी में बहुत वृद्धि हुयी क्योंकि ग्लैडियोलस की खेती में जड़ सड़न की समस्या बहुत बड़े पैमाने पर थी। केन्द्र से प्रशिक्षण एवं प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों के माध्यम से ट्राइकोडर्मा 2 किलो प्रति एकड़ की दर से खेत की मिट्टी एवं बीज उपचार करने से इस समस्या का समाधान हुआ। लागत कम हो गयी तथा लाभांश बढ़ गया।



टिशू कल्चर द्वारा आलू बीज उत्पादन

कृषक का नाम	: श्री शिवम तिवारी
पिता/पति का नाम	: श्री राम करन तिवारी
ग्राम	: नावली चितभवन
विकास खण्ड	: बसरेहर
जनपद	: इटावा
मोबाइल नंबर	: 7310581504



श्री शिवम तिवारी 25 वर्षीय एक उन्नतशील कृषक हैं। इनके पास 10 हे० जमीन है। जिसमें यह धान, मक्का, बाजरा, आलू, गेहूं, सरसों और सब्जियाँ आदि की खेती करते हैं जिससे वर्ष 2019-20 के पूर्व प्रति वर्ष लगभग ₹0 3000000 की आमदनी प्राप्त करते थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : जनपद में धान, मक्का, बाजरा, आलू, गेहूं, सरसों और सब्जियाँ आदि जिले की प्रमुख फसलें हैं। आलू प्रमुख फसल में से एक है जो लगभग 19000 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है। जिले में आलू की औसत उत्पादकता लगभग 220 कु० प्रति हेक्टेयर है जो मध्य मैदानी क्षेत्र के लिए अनुशंसित आलू की उन्नत किस्मों की संभावित उपज का 50 प्रतिशत है। उपज सीमित करने वाले कई कारकों में से उन्नत किस्मों के गुणवत्ता वाले बीजों की खराब उपलब्धता प्रमुख है। आलू की उत्पादकता और गुणवत्ता के साथ-साथ आलू के बीज की उपलब्धता बढ़ाने के लिए, केवीके इटावा ने ब्लॉक बसरेहर के गांव नावली में किसानों के खेत पर कृषि परीक्षण और एफएलडी का आयोजन किया। परिणामस्वरूप उत्पादन में 52 प्रतिशत की वृद्धि हुई लेकिन आलू की उन्नत किस्मों के बीजों की उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई। आलू के बीज की समस्या के समाधान के लिए केवीके ने जनपद इटावा के ब्लॉक बसरेहर के ग्राम नावली के मूल निवासी युवा किसान शिवम तिवारी को तकनीकी ज्ञान देकर आलू के बीज उत्पादन कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने के०वी०के० एवं कृषि विभाग की संस्तुति पर आई०सी०ए०आर०-सी०पी०आर०आई, शिमला से टिशू कल्चर द्वारा आलू के बीज उत्पादन में उच्च तकनीक का प्रशिक्षण प्राप्त किया और 2018-19 के दौरान एक टिशू कल्चर लैब की स्थापना की और 3 वर्षों के भीतर बड़े पैमाने पर टिशू कल्चर के माध्यम से आलू के बीज का उत्पादन शुरू किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : गुणवत्तापूर्ण आलू के बीज के उत्पादन और आपूर्ति से उनकी वार्षिक आय ₹0 30.00 लाख से बढ़कर 1.05 करोड़ हो गई। उनका स्टार्ट-अप इटावा जिले के अन्य बेरोजगार युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है। वर्तमान में वह कुफरी संगम, कुफरी फ्रयोम, कुफरी लीमा, कुफरी सुख्याती, कुफरी ख्याति, कुफरी बहार, कुफरी मोहन, कुफरी नीलकंठ जैसी उन्नत किस्मों के आलू के बीज की आपूर्ति कर रहे हैं।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार : वर्तमान में वह कुफरी संगम, कुफरी फ्राइओम, कुफरी लीमा, कुफरी सुख्याती, कुफरी ख्याति, कुफरी बहार, कुफरी मोहन, कुफरी नीलकंठ जैसी उन्नत किस्मों के आलू के बीज की आपूर्ति कर रहे हैं। कुफरी चिप्सोना और कुफरी लौकर इटावा जिले के साथ-साथ अन्य राज्यों जैसे मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़ और पंजाब में भी भेज रहे हैं।



कृषक प्रतिक्रिया : जनपद में ही आलू का गुणवत्ता बीज मिलने से किसान आलू की खेती को बढ़ा रहे हैं तथा वह इसका लाभ निरंतर उठा रहे हैं।



प्राकृतिक खेती से उन्नति एवं समृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री अरविन्द प्रताप सिंह परिहार
पिता/पति का नाम	:	श्री पुतई सिंह परिहार
ग्राम	:	सिरहौल
विकास खण्ड	:	जसवन्त नगर
जनपद	:	इटावा
मोबाइल नंबर	:	9758209606



श्री अरविन्द प्रताप सिंह परिहार – वर्ष 2019–20 में 1.60 हे० में पारम्परिक विधियों द्वारा खाद्यान्न फसलों की रसायनिक खेती करते थे तथा एक गाय पालते थे जिससे उनको प्रतिवर्ष लगभग ₹0 50000/- की शुद्ध आय प्राप्त होती थी। वर्तमान में यह जनपद के प्राकृतिक खेती के मास्टर ट्रेनर हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण का विवरण : केवीके इटावा द्वारा वर्ष 2019–20 के पश्चात् श्री अरविन्द के प्रक्षेत्रों पर प्राकृतिक खेती के प्रति उनके रुझान को देखते हुए प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित कराये गये तथा उन्नत कृषि यंत्रों का प्रयोग, लाइन से बुवाई, फसल चक्र अपनाना, हरी खाद का प्रयोग, आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त प्रदान किया। प्रदर्शन परीणामों को देखकर वह पूर्ण-रूप से प्राकृतिक खेती की ओर आकर्षित हुए। तथा सभी फसलों को प्राकृतिक रूप से उगाना शुरू किया। नई प्रजातियों एवं फसलों जैसे— काला धान, धान की काला नमक प्रजाति, काला गेहूँ, शरवती गेहूँ एवं बागवानी के साथ-साथ मूँग की खेती भी प्रारम्भ की। उन्होंने 2 देशी गाय भी पाली, जिससे उनको बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र, दशपर्णी अर्क इत्यादि उत्पाद बनाने में सहुलियत हुई। इन्होंने पारम्परिक फसलों को छोड़कर काला चावल, काला गेहूँ, शरवती गेहूँ, बागवानी, औषधीय फसलें, मसाले, सब्जियाँ आदि मिश्रित खेती अपनाना शुरू किया।



तकनीकी हस्तांतरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : पूर्णरूप से प्राकृतिक खेती करने से इनकी शुद्ध आय जो वर्ष 2019–20 में लगभग ₹0 50000 प्रतिवर्ष थी, आज वर्ष 2023–24 तक शुद्ध आय बढ़कर लगभग ₹0 400000 प्रतिवर्ष हो चुकी है। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर एवं देशी गौ आधारित तकनीक अपनाकर विशेष प्रकार की फसलों काला गेहूँ, काला चावल, काला नमक चावल, शरवती गेहूँ, बागवानी, काली भिण्डी जैसे अन्य सब्जियाँ जो उस क्षेत्र के लिये नई थीं को उगाया। इन फसलों को उच्च मूल्य पर ऑनलाइन बिक्री करने से मूल्य वृद्धि हुई। श्री अरविन्द प्रताप सिंह को प्राकृतिक खेती में कई राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किये गये हैं तथा प्राकृतिक खेती में इनके कार्यों को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती के मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार : श्री अरविन्द के द्वारा उन्नत तकनीकों एवं प्राकृतिक खेती द्वारा नई-नई फसलों को लगाकर एवं उनके द्वारा प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त कर आस-पास के 35 कृषकों ने प्राकृतिक खेती करना शुरू किया है।

कृषक प्रतिक्रिया : वर्ष (2019–20) तक इनकी उत्पादन लागत लगभग 80 प्रतिशत एवं शुद्ध आय 20 प्रतिशत तक थी। प्राकृतिक खेती करने से उत्पादन लागत घटकर 20 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक ही आती है। अब इनकी आय पूर्व की तुलना में लगभग ₹0 400000 अर्थात् 8 गुना अधिक है।



प्राकृतिक खेती से सफलता की कहानी

कृषक का नाम	:	श्री रमाकान्त त्रिपाठी
पिता/पति का नाम	:	श्री कृष्ण दत्त उपाध्याय
ग्राम	:	शिवराजपुर
विकास खण्ड	:	मलवाँ
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नंबर	:	6993557977



श्री रमाकान्त त्रिपाठी वर्ष 2019-20 से पूर्व पारम्परिक रूप से धान, गेहूँ, गन्ना, मेंथी, सरसों, दलहन फसलों की खेती करते थे। जिससे उनको प्रतिवर्ष ₹0 280000 की आय प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के पश्चात इन्होंने विभिन्न तकनीकी विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा नई तकनीकों की जानकारी प्राप्त की साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से इन्हें, प्राकृतिक खेती की विधाओं को तकनीकी ढंग से अपनाने की जानकारी प्राप्त हुई तथा प्राकृतिक खेती के उत्पादन हेतु प्रयोग होने वाले निवेश जैसे-जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत तथा फसल सुरक्षा के उत्पादों जैसे-नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र, दशपर्णी अर्क इत्यादि को तैयार करने एवं प्रयोग विधा पर जानकारी प्रदान की गयी तथा समय-समय पर फसल निरीक्षण तथा सुझाव भी केन्द्र द्वारा नियमित रूप से दिया गया। वर्ष 2020 में इन्होंने सरसों की प्राकृतिक खेती प्रारम्भ की तथा स्वयं के बीज का प्रयोग करके 7.50 कुन्तल सरसों की पैदावार की। प्राकृतिक खेती के साथ-2 रसायन मुक्त भोजन मिलने से स्वास्थ्य सुधार एवं स्वास्थ्य में उपचार में होने वाले व्यय पर नियंत्रण हुआ।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बतायी गई तकनीकी तथा किये गये उत्पादन की बिक्री हेतु तकनीकी सुझाव से वर्ष 2019-20 से पूर्व कुल वार्षिक आय जो ₹0 280000 थी वह वर्ष 2019-20 में प्राकृतिक रूप से प्रारम्भ करके जो केवल सरसों की खेती से प्रारम्भ हुई वह वर्ष 2022-23 से गन्ना उत्पादन, मेंथी उत्पादन, सरसों उत्पादन तथा चावल उत्पादन प्राकृतिक खेती से करके आज घर से ही श्री त्रिपाठी जी वर्ष 2019-20 की तुलना में पांच-छः गुना लाभ कमा रहे हैं। अब वर्ष 2023-24 में ₹0 744000 की वार्षिक आय प्राप्त कर रहे हैं। श्री त्रिपाठी जी को प्राकृतिक खेती में राज्य स्तरीय पुरस्कार मा0 मुख्यमंत्री जी द्वारा 22 सितम्बर, 2022 को प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा 11 जनवरी, 2024 को एवं अटारी, कानपुर द्वारा मार्च, 2020 को सम्मानित किया गया।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार : श्री त्रिपाठी जी द्वारा प्राकृतिक खेती आधारित सहकार फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी (एफ0पी0ओ0) का गठन कृषि विज्ञान केन्द्र के मार्गदर्शन में किया गया तथा प्राकृतिक खेती का विस्तार आज लगभग 150 परिवारों में किया गया है। निरन्तर कृषक पहले अपने परिवार खाद्यान्न पूरक उत्पादन कर विस्तार बिक्री हेतु गन्ना, सरसों, गेहूँ, मेंथी की खेती अपना रहे हैं।



कृषक प्रतिक्रिया : श्री रमाकान्त त्रिपाठी जी का कहना है कि पहले तो भरोसा नहीं हो पा रहा था कि इस प्राकृतिक खेती से लाभ होगा परन्तु निरन्तर कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन, बाजार बिक्री हेतु सुझाव से किये गये प्रयासों से 5-6 गुना आय वृद्धि हुई है। आगे एफ0पी0ओ0 के माध्यम से एक बड़ा बाजार के रूप में उभर आयेंगे। राज्य स्तरीय पुरस्कार मिलने से और अधिक प्रोत्साहन मिला।



कृषि के साथ पशुपालन से आय वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा
पिता/पति का नाम	:	श्री शीलेन्द्र सिंह
ग्राम	:	लाखतू
विकास खण्ड	:	हाथरस
जनपद	:	हाथरस
मोबाइल नंबर	:	9758603111



श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा, ग्राम— लाखतू, विकास खण्ड—हाथरस, जनपद—हाथरस के प्रगतिशील किसान हैं। इनका परिवार खेती व पशुपालन पर निर्भर है तथा इनके पास कुल 1.0 हे० कृषि योग्य भूमि है। श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा पूर्व में धान, गेहूँ, सरसों, बाजरा, मिर्च इत्यादि की पारम्परिक खेती करते थे जिससे उन्हें प्रतिवर्ष ₹0 92700 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण: कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद केन्द्र के वैज्ञानिकों से विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त कर खेती में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन तकनीकी को अपना कर मिर्च व अन्य सब्जियों की जैविक खेती कर रहे हैं। साथ ही जैविक कीटनाशी व रोगनाशियों का फसल सुरक्षा के लिए प्रयोग कर रहे हैं। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा खेतों पर परीक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रक्षेत्र दिवस, चौपाल चर्चा आदि कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया गया तथा पशुपालन करने हेतु प्रेरित किया गया। परीक्षण एवं प्रदर्शनों के परिणामों को देखकर उन्होंने इसे अपने खेतों पर अपनाना एवं उगाना शुरू किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : श्री शर्मा जी द्वारा केन्द्र के वैज्ञानिकों से सुझाए गए खेती में विभिन्न कृषि तकनीकों के प्रयोग से धान गेहूँ के साथ सब्जियों की खेती एवं पशुपालन से 1.0 हे० क्षेत्रफल में ₹0 307700 की शुद्ध आय प्राप्त हुई जो कि पूर्व के वर्ष में मात्र ₹0 92700 थी। इस प्रकार शुद्ध आय वर्ष 2023-24 में ₹0 215000 अधिक हो गयी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी का क्षेत्र विस्तार : आस पास के अन्य कृषक भी श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा जी के द्वारा खेती में नवीनतम तकनीकों के प्रयोग से उच्च आय प्राप्त होने से प्रभावित होकर लगभग 215 हेक्टेयर क्षेत्रफल में नवीनतम तकनीकों के साथ खेती कर रहे हैं साथ ही अच्छी नस्ल का पशुपालन भी कर रहे हैं जिससे तकनीकी विस्तार अब तेजी से हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक बताते हैं कि कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस के कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा नई-नई कृषि तकनीकों को अपनाकर खेती में लाभ प्राप्त करने के साथ ही एफ.पी.ओ. भी चलाया जा रहा है जिससे विशेष लाभ मिल रहा है तथा आमदनी बढ़ी है व जीवन स्तर में सुधार हुआ।



खेती के साथ पशुपालन समृद्धि का आधार

कृषक का नाम	:	श्री राकेश कुमार सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री प्रेम सिंह
ग्राम	:	खोडा
विकास खण्ड	:	सहपऊ
जनपद	:	हाथरस
मोबाइल नंबर	:	892360600



श्री राकेश कुमार सिंह, ग्राम-खोडा, विकास खण्ड सहपऊ, जनपद-हाथरस के प्रगतिशील किसान हैं। इनका परिवार खेती व पशुपालन पर निर्भर है। इनके पास खेती योग्य कुल 1.6 हे० भूमि है तथा इनकी शैक्षिक योग्यता स्नातक है। श्री सिंह पूर्व में धान, गेहूँ के साथ सब्जियों में बैंगन एवं आलू की खेती करने के साथ-साथ एक गाय पालते थे जिससे उन्हें प्रतिवर्ष रु० 124500 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : वर्ष 2019-20 के पश्चात् कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के पश्चात् इनको प्रशिक्षणों के माध्यम से नई कृषि तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। साथ ही नई कृषि तकनीकियों के प्रक्षेत्र परीक्षण, नई प्रजातियों के प्रदर्शन तथा प्रक्षेत्र दिवस इनके प्रक्षेत्रों पर आयोजित किये गये। इन परीक्षणों एवं प्रदर्शनों के परिणामों को देखकर इन्होंने इन तकनीकियों को अपनाना शुरू किया। साथ ही अपनी फसलों में कुछ नई फसलों का समावेश किया तथा पशुपालन को बढ़ावा देने के लिये 2 गायों एवं 2 भैंस को भी पाला। जिसके मूत्र एवं गोबर से इन्होंने वर्मी कम्पोस्ट यूनिट स्थापित की तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों से जीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र इत्यादि जैविक उत्पाद तैयार करने के प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् इसे भी अपने खेतों पर लगाना शुरू किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्तमान में श्री राकेश कुमार सिंह धान, गेहूँ, मूँग की खेती के साथ-साथ सब्जियों एवं आलू की भी खेती कर रहे हैं तथा दो गाय एवं भैंस भी पाल रहे हैं जिससे उनकी शुद्ध वार्षिक आय वर्ष 2023-24 में बढ़कर रु 309400 हो गयी। जो कि पूर्व के वर्षों की तुलना में 148.51 प्रतिशत अधिक है। वर्मी कम्पोस्ट इत्यादि के प्रयोग से खेत की उर्वरा शक्ति में सुधार हुआ तथा उर्वरकों की लागत में कमी आयी। जहाँ पर पहले शुद्ध आय रुपया 124500 थी वो बढ़कर रु० 309400 हो गई। श्री राकेश कुमार सिंह के द्वारा केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा सुझाए गए विभिन्न कृषि तकनीकों के प्रयोग एवं पशुपालन के साथ वर्मी-कम्पोस्ट, नाडेप खाद व जैविक उत्पादों के प्रयोग करने के उपरान्त खेती की लागत में कमी आयी साथ ही भूमि में कार्बनिक पदार्थ का स्तर भी बढ़ा जिससे गुणवत्ता युक्त उत्पादन भी अच्छा हुआ।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी का क्षेत्र विस्तार : आस पास के अन्य कृषक भी श्री राकेश कुमार सिंह के द्वारा खेती में नवीनतम तकनीकों के साथ वर्मी-कम्पोस्ट, नाडेप खाद व जैविक उत्पादों के प्रयोग करने से उच्च आय प्राप्त होने से प्रभावित होकर लगभग 110 हेक्टेयर क्षेत्रफल में नवीनतम तकनीकों के साथ खेती कर रहे हैं साथ ही अच्छी नस्ल का पशुपालन भी कर रहे हैं जिससे तकनीकी विस्तार अब तेजी से हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक बताते हैं कि कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस के कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा नवीनतम कृषि की जानकारी व खेती में उनको अपनाने से फसल उत्पाद अधिक हुआ साथ ही आमदनी बढ़ी व जीवन स्तर में सुधार हुआ।



वर्मी कम्पोस्ट जैविक खेती एवं समृद्धि का आधार

कृषक का नाम	: श्री शेर सिंह
पिता/पति का नाम	: स्व० श्री नैकसे
ग्राम	: किशरांव
विकास खण्ड	: अरांव
जनपद	: फिरोजाबाद
मोबाइल नंबर	: 9457371411



श्री शेर सिंह पूर्व में बाजरा एवं गेहूँ की पारम्परिक खेती 3.2 हे० में करते थे तथा ₹0 196960 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे थे जो कि बहुत कम थी एवं परिवार का भरण पोषण मुश्किल था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण : श्री शेर सिंह खेती में हो रहे निरन्तर घाटे के कारण खेती करने से मुँह मोड़ने लगे थे। खेती को लाभप्रद बनाने व खेती से जुड़े हुये कोई अन्य व्यवसाय हेतु तकनीकी के अभाव में एक सही दिशा की जानकारी प्राप्त नहीं थी। परन्तु कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से तकनीकी सुझाव एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्होंने कृषि से जुड़े हुये व्यवसाय केंचुआ पालन एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन का कार्य प्रारम्भ किया। प्रशिक्षण के उपरान्त उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट बेड की स्थापना की तथा इनके पास वर्तमान में 40 वर्मी कम्पोस्ट बेड हैं। एक बेड से प्रति वर्ष 16 कुन्तल वर्मी कम्पोस्ट के हिसाब से 640 कु० वर्मी कम्पोस्ट का वार्षिक उत्पादन प्राप्त होता है और साथ ही इस वर्मी कम्पोस्ट की बिक्री हेतु ₹0 5000 प्रति माह की दर से 7 ग्रामीण बेरोजगार युवाओं को सेल्स मैन बना कर रोजगार दिया है। वर्मी कम्पोस्ट को ग्राहकों को डोर टू डोर तक ₹0 1000 प्रति कु० की दर से बिक्री करते हैं। आज ये **“यांकि वर्मी कम्पोस्ट”** के नाम से अपनी बेवसाइट बनाकर मार्केटिंग का कार्य भी कर रहे हैं।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2023-24 में श्री शेर सिंह गेहूँ, बाजरा एवं आलू की नई प्रजातियों एवं तकनीकों के साथ-साथ 40 वर्मी कम्पोस्ट बेड से ₹0 889300 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं जो कि पूर्व की तुलना में लगभग 4 गुना अधिक है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार : श्री सिंह ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढ़ोतरी करने के उपरान्त आस-पास के लगभग 25 कृषकों को केंचुआ पालन एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन तकनीकी ज्ञान देकर व्यवसाय हेतु प्रेरित किया। जिससे आस-पास के किसान लाभान्वित हुये एवं उन कृषकों के खेतों में जीवांश कार्बन की दशा में सुधार हुआ जिससे खेतों की उत्पादकता में वृद्धि हुई।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री सिंह अपने परिवार के साथ एक सफल केंचुआ पालन एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन कर रहे हैं। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है एवं परिवार का पालन पोषण सही चल रहा है इसके अतिरिक्त 3.2 हेक्टेयर खेती में वर्मी कम्पोस्ट प्रयोग करने के कारण फसलों की उत्पादन लागत कम होने से भी अच्छा लाभ कमा रहे हैं।



पपीता एवं गेंदा की खेती से समृद्धिशाली किसान

कृषक का नाम	:	श्री अमित कुमार कटियार
पिता/पति का नाम	:	श्री सुशील कटियार
ग्राम	:	महरूपुर सहजू
विकास खण्ड	:	बढपुर
जनपद	:	फर्रुखाबाद
मोबाइल नंबर	:	9044774229



श्री अमित कुमार कटियार 38 वर्षीय एक उन्नतशील कृषक हैं। इनके पास 1.0 एकड़ जमीन व सिंचाई हेतु एक सोलर पम्प है। जनपद में मक्का-आलू-मक्का प्रचलित मुख्य फसल चक्र है। इन्होंने भी अपनी 1.0 एकड़ जमीन पर वर्ष 2019 से 2021 तक इसी फसल चक्र को अपनाया। जिससे कुल आय रु 244750 प्राप्त हुई जिसमें से कुल लागत रु 63700 एवं कुल शुद्ध लाभ रु 155850 प्राप्त हुआ। श्री कटियार को इस फसल चक्र से खेती करने से कम वार्षिक आय प्राप्त होती थी जिसके कारण परिवार का अच्छी तरह से भरण-पोषण करना कठिन था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कम हो और वार्षिक आय में भी वृद्धि हो, यह सोचकर कुछ नया करने का मन में विचार आया और कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क कर पपीता व गेंदा के विषय पर विस्तृत तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त किया। पपीता व गेंदा की नर्सरी का उत्पादन पालीबैग में लो-टनल पाली हाउस पद्धति से वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में किया। पपीता की रेडलेडी प्रजाति को 0.5 एकड़ भूमि में 2 x 2 मी की दूरी पर एवं गेंदा की पूसा बसंती प्रजाति को 0.5 एकड़ भूमि में लगाया गया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : प्रथम वर्ष पपीता + गेंदा सहफसल से गेंदा का 12 कु0 उत्पादन प्राप्त हुआ तथा रु 7500 का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। शेष 0.50 जमीन पर प्रथम वर्ष ही गेंदा की पूसा बसंती/जाफरी प्रजाति की वर्ष भर लगातार खेती कर 38 कु0 उत्पादन प्राप्त कर रु 59500 का शुद्ध लाभ मिला। पपीता की फसल से कुल 315 कु0 औसत उत्पादन के साथ रु 108750 का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। पपीता की फसल की समाप्ति के उपरान्त 1.0 एकड़ जमीन पर गेंदा की खेती खरीफ, रबी व जायद में करके कुल औसत उत्पादन 95 कु0 प्राप्त हुआ जिससे रु 132500 का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। इस प्रकार नयी तकनीकी से कुल शुद्ध आय प्रतिवर्ष रु 308250 प्राप्त हुई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार : पपीता एवं फूलों की खेती से जीवन स्तर में सुधार व नये रोजगार के अवसर का भी सृजन हुआ। श्री कटियार की सफलता से प्रेरित होकर शहर के आस-पास के 8-10 कृषक 10 हे0 क्षेत्र में इस तकनीक को अपना कर लाभ उठा रहे हैं।

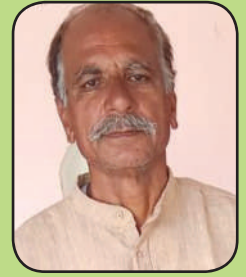


कृषक प्रतिक्रिया : श्री अमित कुमार कटियार अपने परिवार के साथ पपीता व गेंदा की सफल बागवानी करके उत्पादन कर लाभ प्राप्त कर रहे हैं। उनका कहना है कि पपीता एक अति संवेदनशील फसल है जिसका सुनियोजित प्रबंधन कर गुणवत्तायुक्त उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। गेंदा के साथ पपीता की सह-फसल करने से आसपास के खेत में भी कीटों का कम प्रभाव फसल पर आता है। गेंदा व पपीता की फसल से रोजगार का सृजन होता है। गेंदा की खरीफ फसल की तुलना में रबी व जायद से अच्छा लाभ प्राप्त होता है।



मधुमक्खी पालन समृद्धि का साधन

कृषक का नाम	:	श्री उदय भान सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री लालमन सिंह
ग्राम	:	सराय पुख्ता
विकास खण्ड	:	अछल्दा
जनपद	:	औरैया
मोबाइल नंबर	:	9756462354



श्री उदय भान सिंह ग्राम-सराय पुख्ता, विकास खण्ड अछल्दा, जनपद-औरैया ने वर्ष 2019-20 में मधुमक्खी पालन कृषि विज्ञान केन्द्र, औरैया से वर्ष 2018 में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् 50 बक्सों के साथ शुरू किया। इन 50 बक्सों से उनको प्रथम वर्ष में कुल 20 कु० शहद प्राप्त हुआ जिससे कुल लाभ रू० 200000 प्राप्त हुआ जबकि कुल लागत रू० 1.50 लाख थी। जिससे उन्हें मात्र रू० 50000 का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : तत्पश्चात् श्री उदय भान सिंह को पुनः कृषि विज्ञान केन्द्र से विमर्श करने के पश्चात् उन्हें समय-समय पर मधुमक्खी की देख-भाल, मधुमक्खी में लगने वाले रोग-कीट के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। मधुमक्खी पालन से अत्यधिक लाभ प्राप्त करने के लिए उसके रख-रखाव एवं प्रबन्धन के बारे में जानकारी भी दी गयी। शहद की बिक्री हेतु बेहतर बाजार व्यवस्था के बारे में जानकारी एवं बाजार उपलब्ध कराया गया। साथ ही स्थानीय स्तर पर भी बाजार व्यवस्था उपलब्ध करायी गयी। इसके बाद धीरे-धीरे उन्होंने मौन पालन इकाईयों की संख्या में वृद्धि करना प्रारम्भ किया। वर्तमान में उनके पास कुल 250 मधुमक्खी के बाक्स हैं।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : नये रूप से प्रशिक्षण एवं जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने मौन पालन इकाईयों की संख्या में वृद्धि करना प्रारम्भ किया। वर्तमान में उनके पास कुल 250 मधुमक्खी के बाक्स हैं जिससे प्रतिवर्ष 100 कुन्तल शहद उत्पादित कर रहे हैं। उनकी लागत बढ़कर रू० 600000 प्रतिवर्ष हो गयी है परन्तु साथ में कुल लाभ भी रू० 1200000 हो गया है। जो कि लागत घटाने के बाद रू० 600000 की शुद्ध वार्षिक आय प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे हैं, जो कि पूर्व की तुलना में रू० 550000 अधिक है। इनकी आय में मधुमक्खी पालन से लगभग 1100 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री उदय भान सिंह द्वारा मधुमक्खी पालन व्यवसाय सफलतापूर्वक करने से आस-पास के गाँव में युवाओं द्वारा मधुमक्खी पालन स्वरोजगार हेतु जागरूकता आयी है। वर्तमान में 15 युवाओं द्वारा मधुमक्खी पालन का व्यवसाय किया जा रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री उदय भान सिंह एवं अन्य कृषक मधुमक्खी पालन करने से आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बने हैं। उनके इस व्यवसाय को देख कर अन्य कृषक भी मधुमक्खी पालन करने के लिए उत्साहित हैं।



प्राकृतिक खेती एवं मोटा अनाज की खेती से उन्नति

कृषक का नाम	: श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह
पिता/पति का नाम	: श्री शिवबक्श सिंह
ग्राम	: सराय बैरिया खेड़ा
विकास खण्ड	: लालगंज
जनपद	: रायबरेली
मोबाइल नंबर	: श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह



श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह, ग्राम—सराय बैरिया खेड़ा, विकासखंड लालगंज, जनपद—रायबरेली के कृषक हैं। जो लगभग 2.40 हे० क्षेत्रफल में विभिन्न फसलों की परंपरागत खेती करते थे जिससे उनको प्रतिवर्ष रु० 150000 की आय प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण:

श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह के प्रक्षेत्र पर प्राकृतिक खेती एवं मोटे अनाज पर प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र परीक्षण का आयोजन किया गया तथा लाइन से बुवाई, फसल चक्र, हरी खाद एवं प्राकृतिक खेती के उत्पादन में प्रयोग होने वाले निवेश जैसे जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत तथा फसल सुरक्षा के उत्पादों जैसे नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, दशपर्णी इत्यादि को तैयार करने एवं प्रयोग विधि पर जानकारी प्रदान की गई। समय-समय पर सुझाव भी केन्द्र द्वारा नियमित रूप से दिया गया। धीरे-धीरे वह पूर्ण रूप से प्राकृतिक खेती की ओर आकर्षित हो गए और अपने पूरे वर्ष के फसलों में प्राकृतिक खेती को अपनाने लगे। प्राकृतिक खेती के द्वारा गेहूं, आलू आदि फसलों का पैदावार किया गया इसके साथ ही मिलेट्स के अंतर्गत सावां, कोदों, ज्वार, बाजरा, रागी आदि फसलों का उत्पादन किया। खेती में कृषि यंत्र हैप्पी सीडर, रोटोवेटर एवं रीपर का प्रयोग किया गया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय में वृद्धि का विवरण : केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत शुद्ध आय में वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2019-20 के पूर्व कुल वार्षिक आय जो रु० 150000 थी, वह वर्ष 2023-24 में बढ़कर रु० 650000 लाख रुपए हो गयी। जिसमें प्राकृतिक खेती से गेहूं एवं आलू के फसल का उत्पादन करके लगभग रु० 400000 का शुद्ध आय प्राप्त हुआ एवं मिलेट्स की खेती (सावां, कोदो, ज्वार, बाजरा, रागी) करके लगभग रु० 250000 शुद्ध आय प्राप्त हुआ। श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह जी को प्राकृतिक खेती एवं मोटा अनाज की खेती में जनपद स्तरीय एवं प्रदेश स्तरीय कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी क्षेत्र विस्तार : श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह के द्वारा उन्नत तकनीक एवं प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त कर आसपास के लगभग 50 कृषकों को प्राकृतिक खेती एवं मिलेट्स की खेती करना शुरू कराया गया है। श्री सिंह के द्वारा जय लल्लेश्वर कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (एफ.पी.ओ.) का गठन भी किया गया है, जिसमें कृषि यंत्रीकरण के अंतर्गत ट्रैक्टर, रोटोवेटर, सुपर सीडर, हैप्पी सीडर, रीपर आदि का प्रयोग करते हुए कृषि तकनीकी को बढ़ावा दिया जा रहा है। आज श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह के द्वारा क्षेत्र के लगभग 900 किसानों को लाभ प्राप्त हो रहा है और उनको तकनीकी ज्ञान दिया जा रहा है।



कृषक प्रतिक्रिया : कृषक श्री अमरेंद्र बहादुर सिंह के अनुसार आरंभ में प्राकृतिक खेती पर भरोसा नहीं हो रहा था, लेकिन धीरे-धीरे मार्गदर्शन और निरंतर खेती से 5 से 6 गुना आय में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही एफ.पी.ओ. के माध्यम से एक बड़ा बाजार उपलब्ध कराया है और कृषि विज्ञान केन्द्र का मार्गदर्शन प्राप्त कर आय में वृद्धि और जीवन में उन्नति प्राप्त कर रहे हैं।



नवीनतम तकनीकी से समृद्धि एवं आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री हरगेन्द्र बहादुर
पिता/पति का नाम	:	स्व० श्री श्रीपाल
ग्राम	:	जोगमगदीपुर
विकास खण्ड	:	जगतपुर
जनपद	:	रायबरेली
मोबाइल नं०	:	8953398996



श्री हरगेन्द्र बहादुर ग्राम-जोगमगदीपुर विकास खण्ड जगतपुर जनपद-रायबरेली एक 44 वर्षीय उन्नतशील कृषक हैं। वर्ष 2018-19 में उनके पास 3.20 हे० कृषि योग्य भूमि थी जिसमें परम्परागत रूप से धान, गेहूँ, सरसों, उर्द, मूंग इत्यादि फसलों की खेती किया करते थे जिससे उन्हें कुल शुद्ध वार्षिक आय रू० 324000 प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण: श्री हरगेन्द्र बहादुर वर्ष 2019 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के पश्चात् वे लगातार वैज्ञानिकों के सम्पर्क में रहने लगे और उनके द्वारा उन्नतशील कृषि के सम्बन्ध में व्यक्तिगत रूप से व कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा दी गई नवीनतम जानकारी को अपनी खेती में प्रयोग किया। धीरे-धीरे श्री हरगेन्द्र ने धान्य, तिलहनी व दलहनी फसलों की उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य में सुधार व फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी, फसलों में कीट रोग प्रबंधन व खरपतवार नियंत्रण के लिये उपर्युक्त रसायनों का प्रयोग एवं केंचुआ खाद उत्पादन के लिये वर्मी यूनित की स्थापना इत्यादि पहलुओं पर काम किया। उन्होंने गोपालन के महत्व को समझते हुए 2 गायें पालना शुरू किया। फलस्वरूप उन्हें खेती व पशुपालन में आशातीत सफलता मिली।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय वृद्धि का विवरण: कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण के फलस्वरूप वर्ष 2023-24 में श्री हरगेन्द्र बहादुर 3.20 हे० प्रक्षेत्र में धान, गेहूँ, सरसों, उर्द की वैज्ञानिक खेती, 10 गायों के साथ अच्छा दुग्ध उत्पादन व वर्मी यूनित स्थापित कर, केंचुओं की बिक्री कर रहे हैं जिससे वे जैविक खेती की ओर अग्रसर हैं तथा सालाना लगभग रू० 686000 की आय प्राप्त कर रहे हैं।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीक/क्षेत्र विस्तार: वर्ष 2019 में हरगेन्द्र जी के के०वी०के० से जुड़ने के फलस्वरूप अब तक उनके गाँव के 30-40 कृषक व उनके समीप के गाँव जैसे, बेनीकोपा, नवाबगंज, बेनीकामा, पूरे दुर्गाबक्श, पूरे हरभजन, भीख, हेवतहा नेवढ़िया इत्यादि गाँवों के 70-80 कृषक के०वी०के० से जुड़े हैं जो समय-समय पर के०वी०के० प्रांगण में आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेकर तकनीकी जानकारी ले रहे हैं। के०वी०के० वैज्ञानिकों द्वारा ओ०एफ०टी, एफ०एल०डी० व सी०एफ०एल०डी० के द्वारा उन्नतशील प्रजातियों के बीज प्राप्त कर रहे हैं तथा उन्हें खेती में प्रयोग कर लाभ कमा रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : वर्ष 2019 से के०वी०के० से जुड़ने के बाद उनके जीवन में बदलाव आया है। खेती में बदलाव के साथ जीवन स्तर में सुधार हुआ है। साथ-साथ अन्य गाँवों के कृषकों को के०वी०के० से जोड़ा जिससे उन्हें फायदा मिल रहा है।



बकरी पालन उन्नति का साधन

कृषक का नाम	:	श्री नागेन्द्र कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री राजेन्द्र कुमार
ग्राम	:	नरैनी
विकास खण्ड	:	हसवा
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नंबर	:	7388320613



श्री नागेन्द्र कुमार ग्राम-नरैली विकास खण्ड हसवा जनपद-फतेहपुर वर्ष 2020 से पूर्व 0.48 हे० क्षेत्रफल में धान, गेहूं, अरहर, लाही, मूंग, उर्द की खेती करते थे जिससे उन्हें लगभग रुपये 75000 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी। जो परिवार के भरण-पोषण के लिये काफी कम थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण:

श्री नागेन्द्र कुमार वर्ष 2021-22 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा उन्होंने वहाँ से फसलों की उत्पादन तकनीकी तथा अन्य विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया साथ ही बकरी पालन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। तत्पश्चात् उन्होंने वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में 10 बकरी व 01 बकरे से बकरी पालन शुरू किया। समय-समय पर वैज्ञानिकों से बकरी पालन की तकनीकी जानकारी प्राप्त की।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण :

बकरी पालन व्यवसाय शुरू करने के पश्चात् उनकी आय में वृद्धि हुई है। वर्तमान में उनके पास बरबरी एवं जमुनापारी नस्ल के कुल 12 बकरी व 03 बकरे हैं जिससे उनको प्रति वर्ष रू० 97500 की शुद्ध आय प्राप्त हो रही है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार :

अब तक लगभग 20 कृषकों को उन्होंने बकरी पालन अपनाने हेतु प्रेरित किया एवं उन्हें सस्ते दाम में बकरी के बच्चे बेच कर उन्हें बकरी पालन के व्यवसाय से जोड़ा है।

कृषक प्रतिक्रिया : बड़े स्तर पर बकरी पालन के लिए वैज्ञानिक विधि व तकनीकी द्वारा अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यह आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने वाला व्यवसाय है।



खेती के साथ पशुपालन आय वृद्धि का साधन

कृषक का नाम	:	श्री चन्द्र शेखर
पिता/पति का नाम	:	श्री पुरुषोत्तम
ग्राम	:	डिगसरा
विकास खण्ड	:	जलालाबाद
जनपद	:	कन्नौज
मोबाइल नंबर	:	6394087573



श्री चन्द्र शेखर आत्मज श्री पुरुषोत्तम ग्राम—डिगसरा, पोस्ट—जलालाबाद के निवासी हैं। पति, पत्नी तथा दो बच्चे हैं। कुल खेती 0.4 हे० है जिसमें गेहूँ, आलू, धान, सूर्यमुखी, मक्का तथा आलू की खेती करते हैं। एक भैंस तथा बकरी का भी पालन करते हैं। श्री चन्द्रशेखर वर्ष 2019–20 में विभिन्न फसलों में स्थानीय प्रजातियों का प्रयोग करते थे तथा रोग बीमारियों का देशी उपचार करते थे। अपनी उपज को ग्रामीण मण्डियों में बिक्री हेतु ले जाते थे। पशुओं की स्थानीय नस्लों को पालते थे तथा मुख्यतः चराई पर निर्भर थे। इस सबसे वह प्रतिवर्ष ₹0 51700 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : वर्ष 2020 में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये तथा विभिन्न विषयों पर तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् नई प्रजातियों एवं तकनीकों को उनके प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन एवं मूल्यांकन कराया गया जिसके परिणामों को देखकर इन्होंने नई तकनीकों एवं प्रजातियों को अंगीकृत किया। नई प्रजातियों के चयन, फसलों में कीट व रोग प्रबन्धन हेतु आई०पी०एम० तकनीकों के प्रयोग, उपज की ग्रेडिंग, संतुलित उर्वरकों का प्रयोग के साथ-साथ पशुपालन में उन्नतशील नस्लों के पालन, दूध को सहकारी समितियों को बेचना, बकरी के बच्चों को नौ माह की उम्र में बेचने इत्यादि तकनीक को अपनाया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण: कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रदान की गयी तकनीकों को अपनाने तथा उच्च नस्ल की पशुओं को पालने से इनको वर्ष 2023–24 में कुल ₹0 151700 की शुद्ध आय प्राप्त हुई। जो कि वर्ष 2019–20 की तुलना में 193 प्रतिशत अधिक थी।



अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री चन्द्रशेखर की सफलता के उपरान्त क्षेत्र के अन्य कृषक भी खेती के साथ पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपना रहे हैं जिससे इस तकनीक का आस-पास के गाँव में विस्तार हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री चन्द्र शेखर परिवार के साथ मिलकर अधिक लाभ लेने के साथ ही साथ अपने कार्यों से प्रसन्न हैं।



कृषक तकनीकी एवं पशु पालन से आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री सुनील कुमार सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री रामवीर सिंह
ग्राम	:	मुकुंदपुर
विकास खण्ड	:	लोधा
जनपद	:	अलीगढ़
मोबाइल नंबर	:	9412397318



श्री सुनील कुमार सिंह ग्राम— मुकुंदपुर विकास खण्ड लोधा जनपद—अलीगढ़ 2019–20 से पहले परंपरागत तरीके से खेती, पशुपालन करते आ रहे थे। जिससे उनको कोई विशेष लाभ नहीं प्राप्त हो रहा था। वर्ष 2019–20 में उनके पास 6 भैंस तथा 2 देशी नस्ल की गाय थीं। जिससे कुल 30 लीटर दूध प्राप्त हो रहा था जो रुपये 30 प्रति ली० से ज्यादा की दर से नहीं बेच पा रहे थे। उनके पास उस समय लगभग 2.4 हे० खेती योग्य भूमि थी। जिसमें वह गेहूं एवं बाजरा की खेती कर रहे थे। जिससे प्रतिवर्ष लगभग रु 300000 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण : श्री सुनील कुमार वर्ष 2020 में कृषि विज्ञान केन्द्र अलीगढ़ के संपर्क में आये। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा इनको खेती व पशुपालन की नई कृषि तकनीकों को अपनाने के लिये प्रशिक्षण प्रदान किये गये तथा इनके प्रक्षेत्रों पर नई प्रजातियों व तकनीकी का मूल्यांकन व प्रदर्शन कराया गया। जिसके परिणाम को देखकर उन्होंने इनको अपनाया व नये रूप में खेती को प्रारम्भ किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण:

वर्ष 2023–24 में उनके पास लगभग 20 मुर्रा भैंस तथा 10 गाय साहीवाल, राठी, होलस्टीन फ्रीजियन नस्ल की हैं। जिससे लगभग प्रतिदिन 120 लीटर दूध प्राप्त हो रहा है। यह दूध को आई 1 तथा आई 2 के मापदंडों से तैयार कर रहे हैं। इससे इनका दूध लगभग रु० 80 प्रति लीटर प्रतिदिन घर से ही बिक जा रहा है। जिससे इन्हें रु० 9600 प्रतिदिन दूध से प्राप्त हो रहा है। इस तरह दूध से प्रतिमाह लगभग रु० 130000 शुद्ध लाभ प्राप्त हो जाता है। इसके साथ ही साथ श्री सुनील कुमार वर्मी कंपोस्ट की बड़ी यूनिट लगा रखी है जिससे प्रतिवर्ष 1 लाख रुपए वर्मी कंपोस्ट से आय प्राप्त कर लेते हैं। आज के समय में उनके पास स्वयं की 4.8 हे० भूमि हो गई है जिसमें पशुओं के लिए नेपियर घास, बरसीम, ज्वार, चरी उगा रहे हैं। खेती में यह आलू, टमाटर, गोभी, गेहूं, बाजरा आदि की नवीनतम प्रजातियों की खेती कर रहे हैं जिससे प्रतिवर्ष शुद्ध आय रु० 600000 अर्जित कर रहे हैं।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार:

श्री सुनील कुमार सिंह की लगातार सफलता को देखते हुए गांव के कई किसान वर्मी कंपोस्ट बना रहे हैं, नेपियर घास उगा रहे हैं तथा आज के समय में लगभग हर घर में तीन से पांच गाय और 4 से 5 भैंस अवश्य पाली जा रही हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री सुनील कुमार सिंह द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई पद्धति से खेती व पशुपालन करके पूर्णतया संतुष्ट हैं तथा वह अन्य कृषकों को भी इसी तकनीकी को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।



नियमित आय हेतु बकरी पालन एवं नेपियर उत्पादन

कृषक का नाम	:	श्री राधे श्याम
पिता/पति का नाम	:	श्री सोने लाल
ग्राम	:	बसैत
विकास खण्ड	:	किशनी
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नंबर	:	9997781828



श्री राधे श्याम ग्राम— बसैत, विकास खण्ड किशनी जनपद—मैनपुरी के प्रगतिशील कृषक हैं जिनके पास मात्र 0.2 हे० कृषि भूमि व दो भैंस थी। जिससे उन्हें मात्र रु० 3250 की शुद्ध आय होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण : श्री राधे श्याम ने वर्ष 2022 में बहुवर्षीय हरा चारा नेपियर घास के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क किया तथा सितम्बर में “बकरी – पालन एक लाभकारी व्यवसाय का 07 दिवसीय प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त किया जिसमें जनपद के लिये उपयोगी नस्लें, आवास व्यवस्था, आहार प्रबन्धन, प्रमुख बीमारियाँ, उनसे बचाव व टीकाकरण तथा ग्रामीण स्तर पर समुचित प्रबन्धन उपयोगी हरा चारा आदि विषय प्रमुख थे।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : श्री राधे श्याम ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के मार्गदर्शन व तकनीकी सहयोग से 10 बकरी एवं 1 बकरा (10+1) से अपना बकरी पालन व्यवसाय शुरू किया। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी बकरियों की संख्या में वृद्धि करना शुरू की तथा दुधारू पशु भी पालना शुरू किया। वर्तमान में उनके पास कुल 31 बकरियाँ हैं जिससे वह प्रति वर्ष रु० 51850 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं। श्री राधे श्याम की शुद्ध आय 2022 से पहले 0.2 हे० भूमि एवं दो भैंस से मात्र रु० 3250 थी जो वर्ष 2023-24 में 31 पशुओं के साथ रु० 51250 हो गयी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार : श्री राधे श्याम के सफल बहुवर्षीय नेपियर चारा उत्पादन तथा बकरी पालन की सफलता के उपरान्त क्षेत्र व आस-पास के 17 कृषकों/पशुपालकों द्वारा बकरी पालन व नेपियर उत्पादन तकनीक को अपनाया गया है जिससे सभी परिवार अतिरिक्त आय प्राप्त कर रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री राधे श्याम अपने परिवार के साथ कृषि नवाचार के तहत कृषि के साथ में बकरी पालन व्यवसाय लगन के साथ कर रहे हैं अतिरिक्त आय से बच्चों के शिक्षा पर व्यय उपरान्त शेष राशि से व्यवसाय को और बढ़ाना चाहते हैं तथा केन्द्र द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण एवं प्रमाण पत्र के आधार पर उत्तर प्रदेश सरकार की पशुधन मिशन के तहत वृहद स्तर पर बकरी पालन के व्यवसाय हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। वर्तमान में श्री राधे श्याम के पास छोटे बड़े पशु सहित कुल 31 बकरियाँ हैं।



जैविक हल्दी से आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री रघुवीर सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री उजागर सिंह
ग्राम	:	नगला पऊलाल, असुआ
विकास खण्ड	:	शिकोहाबाद
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नंबर	:	9457103737



श्री रघुवीर सिंह ग्राम— नगला पऊलाल, विकास खण्ड शिकोहाबाद, जनपद—फिरोजाबाद के रहने वाले हैं इनके पास 1.2 हे० कृषि योग्य भूमि है जिसमें यह धान, गेहूँ, आलू की पारंपरिक खेती करते थे जिससे इन्हें अपनी खेती से अधिक लाभ नहीं हो पा रहा था तथा खेती में रासायनिक उर्वरक एवं रासायनिक दवाओं में अधिक खर्च हो रहा था, जिससे शुद्ध लाभ कम मिल रहा था। इनकी शुद्ध आय रु० 87095 प्रतिवर्ष थी।



कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री रघुवीर सिंह वर्ष 2022 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हजरतपुर के संपर्क में आये। वहाँ पर इन्हें प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनों के माध्यम से जैविक खेती के बारे में बताया गया। जैविक खेती पर प्रदर्शनों के परिणामों से प्रेरित होकर वर्ष 2022 से अपनी पूरी भूमि में आलू, मटर, अरबी, गाजर, मूली, चुकन्दर, शकरकन्द, हल्दी, गन्ना, धान एवं गेहूँ जैविक विधि से उगाना शुरू कर दिया। साथ ही फसलों में वृक्षा आयुर्वेद विधि से बने हर्बल कुनाव जल (कुणप जल) को पलेवा एवं सिंचाई जल के साथ प्रयोग कर रहे हैं। जिससे फसलें अधिक पैदावार व गुणवत्ता युक्त पैदा हो रही हैं। जैविक हल्दी से जैविक हल्दी पाउडर तथा

कच्ची हल्दी का अचार बनाकर स्थानीय बाजार में बेच रहे हैं और अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। इनके पास चार गायें हैं जिनके माध्यम से जैविक खेती कर रहे हैं। जिसके कारण उत्पादों का बाजार भाव अधिक मिल रहा है, जैविक खेती करने के उपरान्त इन्होंने अपने खेतों में रासायनिक उर्वरक एवं रासायनिक दवाओं का प्रयोग पूर्णतः बंद कर दिया। जिससे शुद्ध लाभ में बढ़ोत्तरी हुई।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण: वर्ष 2023–24 में 1.2 हे० क्षेत्र में बाजरा, गेहूँ तथा आलू की जैविक खेती से रु० 77437 तथा जैविक हल्दी से रु० 710000 की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त कर रहे हैं। इस प्रकार वर्ष भर में श्री रघुवीर सिंह जैविक विधि से फसलें उगाकर रु० 787437 की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त कर रहे हैं।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार: श्री रघुवीर सिंह ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढ़ोत्तरी करने के उपरान्त अपने गांव एवं आस-पास गांव के लगभग 03 कृषकों ने जैविक खेती एवं जैविक हल्दी का उत्पादन शुरू किया और इन्होंने लगभग 0.20 हे० में जैविक हल्दी का उत्पादन कर हल्दी का पाउडर बनाकर रु० 300 प्रति कि०ग्रा० की दर से स्थानीय बाजार एवं विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी कार्यालय में जाकर अपने उत्पाद की बिक्री कर अपनी आय में वृद्धि की है जिससे उनके आर्थिक जीवन स्तर में सुधार हुआ और खेती को निरंतर करने लगे।

कृषक प्रतिक्रिया: श्री रघुवीर सिंह ने जैविक हल्दी का उत्पादन किया जिससे इनकी आय में बढ़ोत्तरी हुई और इसके साथ-साथ जीवन स्तर में सुधार हुआ एवं तकनीकी खेती की ओर रुचि बढ़ती गई। इस खेती के माध्यम से अपने गांव के कृषकों को तकनीकी ज्ञान देकर उन्हें भी जैविक खेती के लिये प्रेरित किया जिससे वह भी इस खेती की ओर आकर्षित हुये। जिससे उनकी आय में वृद्धि से उनके जीवन स्तर में सुधार आ रहा है।



कृषि विविधीकरण से आय वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री लाल सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री द्वारिका सिंह
ग्राम	:	पछायेपुरवा
विकास खण्ड	:	जलालाबाद
जनपद	:	कन्नौज
मोबाइल नंबर	:	9236955440



श्री लाल सिंह, ग्राम-पछायेपुरवा, विकास खण्ड जलालाबाद जनपद-कन्नौज के प्रगतिशील कृषक हैं। उनके पास मात्र 0.8 हे० भूमि थी। जिसमें से वह 0.4 हे० क्षेत्रफल में वर्ष 2020 में मक्का, धान, आलू, गेहूँ की खेती करते थे जिससे उनको शुद्ध लाभ ₹0 41301 प्राप्त होता था। साथ ही वह 0.4 हे० क्षेत्र में तालाब बनाकर मछली पालन करते थे जिससे उन्हें प्रतिवर्ष ₹0 70000 तथा 1 गाय के पालने से उसके दूध से कुल ₹0 12600 का शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा था। तीनों घटकों से मिलाकर वर्ष भर में ₹0 133901 प्रतिवर्ष की शुद्ध आय प्राप्त करते थे जो कि कम था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : वर्ष 2022-23 में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से खेती के साथ पशुपालन एवं मत्स्य पालन की नई व आधुनिक विधाओं की जानकारी प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनों के माध्यम से प्राप्त की तथा नई प्रजातियों के बीज व नई तकनीकों को अपने खेतों पर लगाया जिससे उन्हें फसल उत्पादन, पशुपालन एवं मत्स्य पालन में आशातीत वृद्धि हुई।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्तमान में श्री लाल सिंह 0.4 हे० क्षेत्र में मक्का की उच्च उत्पादकता वाली प्रजाति बायर डिकाल्ब 9144, धान की पी०बी० 1692, आलू की प्रजाति पुष्कर, गेहूँ की एच०डी० 2967 इत्यादि नई प्रजातियों, पशुपालन में 1 गाय तथा एक भैंस का पालन करके तथा मत्स्य पालन में बाउस, रोहू एवं नैन नरुल की मछलियों को उत्पादित कर रहे हैं। जिससे उन्हें इन तीनों घटकों से क्रमशः ₹0 196070, ₹0 62200 एवं ₹0 253500 की शुद्ध आय प्रति वर्ष प्राप्त हो रही है जो कि तीनों घटकों को मिलाकर तकनीकी हस्तान्तरण के पश्चात् जो कि 2020 में प्राप्त ₹0 51170 की तुलना में ₹0 377869 अधिक है तथा किसान समृद्धि की ओर बढ़ रहा है।



अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री लाल सिंह के कार्य एवं लाभ को देखकर चार अन्य कृषकों द्वारा इसको अपनाया गया है तथा अन्य कृषक भी कृषि के साथ पशुपालन एवं मत्स्य पालन हेतु प्रेरित हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : खेती व पशुपालन के साथ मत्स्य पालन से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हुई। खराब पड़ी जमीन पर तालाब बनाकर कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से मत्स्य पालन किया। कृषि विज्ञान केन्द्र से सीधे जुड़ने से लाभ ही लाभ मिला। लागत कम हो गयी तथा लाभांश बढ़ गया।



बागवानी से आर्थिक समृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री देवी दयाल
पिता/पति का नाम	:	श्री चरन सिंह
ग्राम	:	कंथरी
विकास खण्ड	:	अरांव
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नंबर	:	9557235743



श्री देवी दयाल पुत्र श्री चरन सिंह बी टेक, एम.एस.सी. बायोटेक से अध्ययन करने के पश्चात पिताजी को खेती में हो रहे निरन्तर घाटे के कारण खेती से मुँह मोड़ने लगे थे। वे पारम्परिक रूप से 2 हे0 क्षेत्र में बाजरा, गेहूँ एवं आलू की खेती करते थे जिससे उन्हें प्रतिवर्ष रू0 169000 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : वर्ष 2022 के पश्चात् वे खेती में कुछ नया करने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्र पर आये और वैज्ञानिकों से तकनीकी जानकारी एवं फल उत्पादन पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वह जिला उद्यान अधिकारी से मिले तथा केन्द्र के मार्गदर्शन एवं उनके सहयोग से एक एकड़ ड्रैगन फ्रूट का बाग एवं एक एकड़ एप्पल बेर का बाग अपने प्रक्षेत्र पर लगाया। जिससे खेती में आर्थिक लाभ होने लगा तथा पारिवारिक स्थिति में सुधार हुआ। जिला फिरोजाबाद के अन्तर्गत उद्यान विभाग द्वारा ड्रैगनफ्रूट को राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया तथा इस वर्ष उद्यान विभाग द्वारा 3 x 3 मीटर की स्पेसिंग पर ड्रैगनफ्रूट लगाने पर किसानों को अनुमन्य लागत रू0 125000 का 40 प्रतिशत अधिकतम अनुदान रू0 50000 प्रति हैक्टेयर तीन वर्षों में 60:20:20 के अनुपात में दिया गया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2023-24 में बाजरा, गेहूँ, ड्रैगनफ्रूट एवं एप्पल बेर की खेती करने से रू0 225725 की शुद्ध आय प्राप्त हुई जो कि पूर्व के वर्ष की तुलना में 33.26 प्रतिशत अधिक थी साथ ही ड्रैगनफ्रूट एवं एप्पल बेर के बाग स्थापित हो जाने के बाद अगले वर्षों में इसकी लागत नगण्य रहेगी जिससे उनके आर्थिक लाभ कई गुना बढ़ जायेगा।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार: श्री देवी दयाल ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढ़ोतरी करने के उपरान्त अपने गांव एवं आस-पास गांव के लगभग 22 कृषकों को प्रेरित करके 24 हे0 क्षेत्रफल में एप्पल बेर एवं ड्रैगनफ्रूट के बाग लगवाये हैं जिससे किसान खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं एवं उनकी आय में लगभग दो गुना वृद्धि हुयी है।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री देवी दयाल अपने परिवार के साथ सफल बागवानी करके फल उत्पादन कर रहे हैं तथा इनकी आय में निरंतर वृद्धि हो रही है। परिवार का पालन पोषण, शिक्षा एवं अर्थिक स्तर में सुधार हुआ है तथा इसके साथ-साथ 2 हे0 भूमि से अच्छा लाभ कमा रहे हैं।



अन्तः फसल उत्पादन से आय वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री यदुन्दन सिंह पुजारी
पिता/पति का नाम	:	श्री राम गोपाल सिंह
ग्राम	:	स्टेशनपुरवा
विकास खण्ड	:	बांकेगंज
जनपद	:	लखीमपुर खीरी
मोबाइल नंबर	:	9838769268



श्री यदुन्दन सिंह पुजारी ग्राम-स्टेशनपुरवा जनपद-लखीमपुर खीरी के प्रगतिशील कृषक हैं इनके पास कुल 2.6 हे० भूमि है जिसमें यह केला की खेती करते हैं। जिससे यह प्रतिवर्ष रु० 120000 की आमदनी प्राप्त कर रहे थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : वर्ष 2020 के पश्चात अपनी खेती में कुछ नया करने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क किया तथा प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनों के माध्यम से केले में अन्तः सस्यन की विधियों की जानकारी प्राप्त की। जिसमें केले के साथ सब्जी, धनियाँ एवं गेंदा फूल का अन्तः फसल उत्पादन करना शुरू किया साथ ही टपक विधि से प्रक्षेत्र पर सिंचाई प्रबन्धन एवं नवीन फसलों जैसे-स्ट्रॉबेरी, सतावरी, गुलाब, सूरन, पपीता, लहसुन आदि फसलों में पालीथीन एवं पुवाल को मल्विंग के रूप में प्रयोग करना शुरू किया। समय-समय पर केन्द्र द्वारा तकनीकी सलाह प्रदान की गयी एवं केले में धनिया का अन्तः फसल परीक्षण प्रदर्शन कराया गया। उच्च बाजार मूल्य हेतु जनपद व अन्य संस्थानों से सम्पर्क स्थापित करवाया गया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : अन्तः फसल पर तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त श्री पुजारी को केले में धनियाँ, गेंदा एवं मिर्च आदि से लगभग रु० 38000 से रु० 140000 प्रति एकड़ की शुद्ध अतिरिक्त आय प्राप्त हुई। नवीन फसलों में स्ट्रॉबेरी से रु० 240000 एवं लहसुन से रु० 355000 की शुद्ध आय प्रति एकड़ प्राप्त हुई जोकि पूर्व की तुलना में कई गुना अधिक थी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री पुजारी की सफलता को देखते हुए विकास खण्ड के 10 कृषकों ने स्ट्रॉबेरी, 75 कृषकों ने केले में अन्तः फसल, 8 कृषकों ने जिमिकन्द की खेती प्रारम्भ की साथ ही 20 कृषकों ने टपक विधि से सिंचाई करना प्रारम्भ कर दिया जिससे पानी की बचत होने लगी तथा उत्पादन भी अधिक हो रहा है।



कृषक प्रतिक्रिया : टपक सिंचाई होने से पानी की बचत होती है तथा खर्च कम होता है साथ ही लहसुन, प्याज, केला में पुआल व पालीथीन से मल्विंग से रोग कीट कम लगते हैं तथा उत्पादन बढ़ता है एवं केला व सतावर में सब्जियों को अन्तः फसल के रूप में प्रयोग करने से संसाधन व श्रम का पूर्ण उपयोग होता है।



मधुमक्खी पालन लाभकारी व्यवसाय

कृषक का नाम	:	श्री अभिषेक कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री संगम लाल सिंह
ग्राम	:	घरवासीपुर
विकास खण्ड	:	धाता
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नंबर	:	9918448831



श्री अभिषेक कुमार ग्राम-घरवासीपुर विकास खण्ड धाता, जनपद-फतेहपुर 30 बाक्स के साथ पहले से मधुमक्खी पालन से शहद उत्पादन का कार्य कर रहे थे। एक मधुमक्खी बाक्स से अक्टूबर से अप्रैल माह में 15 से 20 कि.ग्रा. शहद प्राप्त हो रहा था। एक किलो शहद को ₹0 60-70 प्रति किलो की दर से विक्रय करके प्रति वर्ष ₹0 42000 की आय प्राप्त कर रहे थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण:

शहद का उत्पादन बढ़ाने एवं अधिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से वर्ष 2021-22 में यह कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर के सम्पर्क में आये तथा इन्होंने केन्द्र से वैज्ञानिक विधि से मधुमक्खी पालन, शहद उत्पादन, पॉलेन का उत्पादन, पूरे वर्ष शहद उत्पादन, स्थान परिवर्तन, जनपद, प्रदेश, फसल के अनुसार प्रयोग एवं विक्रय इत्यादि का तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही समय-समय पर सम सामयिक प्रबन्धन हेतु लगातार प्रशिक्षण एवं जानकारीयों केन्द्र से प्राप्त करते रहे।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय एवं व्यय का विवरण :

मधुमक्खी पालन की कृषि तकनीकी हस्तान्तरण से श्री अभिषेक कुमार प्रतिवर्ष 25 से 30

किग्रा. शहद उत्पादन 200 बाक्स के साथ कर रहे हैं एवं ₹0 80 प्रति किग्रा की दर से शहद विक्रय से ₹0 616000 की आय प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही प्रति वर्ष प्रति बाक्स 3 किग्रा. पॉलेन का ₹0 410 की दर से बिक्री से ₹0 246000 की आय भी प्राप्त कर रहे हैं। इस प्रकार यह प्रतिवर्ष शहद उत्पादन से ₹0 862000 की कुल शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान में इनकी कुल शुद्ध आय ₹0 911000 है। जो कि पूर्व वर्ष 2021-22 की तुलना में 16 गुना अधिक है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री अभिषेक कुमार की सफलता से प्रेरित होकर अन्य कृषक भी शहद उत्पादन की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अब तक लगभग 175 कृषक मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : मधुमक्खी पालन शहद उत्पादन का कार्य बेरोजगार कृषक के लिए वरदान स्वरूप है। रसायनों के छिड़काव से मधुमक्खी मर जाती हैं। शहद का उत्पादन कम हो जाता है। ब्लाक स्तर पर शहद खरीदने-बेचने का व्यवसाय सरकारी स्तर पर होना चाहिए।



मौसम सम्बन्धी सलाह सेवाओं से लागत में कमी एवं उत्पादन वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री राम प्रकाश अवस्थी
पिता/पति का नाम	:	श्री सम्पत कुमार अवस्थी
ग्राम	:	शाह
विकास खण्ड	:	बहुआ
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नंबर	:	9838403656



श्री राम प्रकाश अवस्थी ग्राम—शाह, विकास खण्ड, जनपद—फतेहपुर द्वारा धान, गेहूं, सरसों, उरद, मूंग की फसलें ली जाती थीं लेकिन कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े न रहने के कारण यह से जारी होने वाली कृषि मौसम सलाह से वंचित थे जिससे इनको मौसम की मार से होने वाले फसल नुकसान के कारण धन की हानि होती थी।

वर्ष 2021–22 से कृषक कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर से जुड़े हुए हैं और वे निरंतर यहाँ से जारी होने वाली कृषि मौसम सलाह का लाभ उठा रहे हैं, जिसके कारण इनको मौसम पूर्वानुमान की जानकारी हो जाती है और ये अपने फसल प्रबंधन (बुआई, सिंचाई, दवा का छिड़काव और फसल की कटाई) का कार्य सही समय कर लेते हैं और मौसम की मार से होने वाले फसल नुकसान से बच जाते हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर द्वारा प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार को कृषि मौसम सलाह व्हाट्सएप ग्रुप, प्रिन्ट मीडिया एवं फोन कॉल के माध्यम से भेजा जाता है। जिसमें मौसम पूर्वानुमान के साथ—साथ फसल प्रबंधन एवं पशुपालन की भी जानकारी प्रदान की जाती है।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : श्री राम प्रकाश अवस्थी लघु कृषक की श्रेणी में आते हैं। इनके द्वारा वर्ष 2023–24 में 2.0 हेक्टेर क्षेत्रफल में धान की दो प्रजातियाँ (ताज एवं शरबती) लगाई गई थीं। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रदान किए जाने वाली कृषि मौसम सलाह का उपयोग करके



इनको 5 सिंचाई की बचत हुई (एक सिंचाई का मूल्य रुपया 5000 के हिसाब से) रु0 25000 और इसके अलावा 2 दवा का छिड़काव की बचत (एक दवा के छिड़काव का मूल्य रुपया 1000 के हिसाब से) रुपया 2,000 जिससे इनको मौसम की अड़वाइजरी के माध्यम कुल रुपया 27000 की आय में वृद्धि हुई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गई तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार: व्हाट्सएप ग्रुप, प्रिन्ट मीडिया एवं फोन कॉल के माध्यम से लगभग 4000–5000 कृषकों तक मौसम पूर्वानुमान की जानकारी कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पहुँचाई जाती है। कृषक द्वारा भी लगभग 10 कृषकों को व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया है और इनके द्वारा भी अपने क्षेत्र में कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त होने वाली मौसम पूर्वानुमान का विस्तार किया जा रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रदान की जाने वाली कृषि मौसम सलाह से संतुष्ट हैं और वह इसका लाभ निरंतर उठा रहे हैं।



खेती के साथ पशुपालन समृद्धि का साधन

कृषक का नाम	:	श्री हरिओम शर्मा
पिता/पति का नाम	:	श्री भगवती प्रसाद शर्मा
ग्राम	:	नगला गलिया
विकास खण्ड	:	सासनी
जनपद	:	हाथरस
मोबाइल नंबर	:	9761181259



श्री हरिओम शर्मा ग्राम—नगला गलिया, विकास खण्ड—सासनी जनपद— हाथरस के प्रगतिशील किसान हैं। इनका परिवार खेती व पशुपालन पर निर्भर है। इनकी शैक्षिक योग्यता इन्टरमीडिएट है तथा इनके पास खेती योग्य कुल भूमि 2.20 हे० है। 2019–20 के पूर्व धान, गेहूँ, सरसों की खेती के साथ पशुपालन भी करते थे जिससे इनको प्रति वर्ष रू० 151200 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री शर्मा वर्ष 2020 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा वैज्ञानिकों से अपनी आय में वृद्धि करने के बारे में चर्चा की। कृषकों के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा उनके जरूरत के अनुसार और उनके संसाधन के अनुरूप कृषक प्रशिक्षण, खेतों पर परीक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, पशु टीकाकरण, प्रक्षेत्र दिवस, चौपाल चर्चा आदि कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया गया तथा पारम्परिक खेती के साथ-साथ नई प्रजातियों को अपनाने की सलाह दी गयी तथा पशुपालन हेतु भी प्रेरित किया गया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : श्री हरिओम शर्मा जी के द्वारा केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा सुझाए गए विभिन्न कृषि तकनीकों के प्रयोग एवं पशुपालन से 2.20 हे० क्षेत्रफल में रू० 359000 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं जो कि पूर्व के वर्षों में प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल में रू० 151200 थी। जिससे पूर्व की आय की अपेक्षा 137 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई साथ ही फसलों के उत्पादों की गुणवत्ता में भी सुधार देखा गया।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार : आस पास के अन्य कृषक भी श्री शर्मा जी के द्वारा खेती में नवीनतम तकनीकों के प्रयोग से उच्च आय प्राप्त होने से प्रभावित होकर लगभग 120 हेक्टेयर क्षेत्रफल में नवीनतम तकनीकों के साथ खेती के साथ ही अच्छी नस्ल का पशुपालन भी कर रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक बताते हैं कि कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस के कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा नवीनतम कृषि की जानकारी व खेती में उनको अपनाने से फसल उत्पादन अधिक हुआ साथ ही आमदनी भी बढ़ी व जीवन स्तर में सुधार हुआ।



खेती के साथ पशुपालन समृद्धि का साधन

कृषक का नाम	: श्री हरेन्द्र सिंह
पिता/पति का नाम	: श्री रामपाल
ग्राम	: पट्टीशक्ति
विकास खण्ड	: सादाबाद
जनपद	: हाथरस
मोबाइल नंबर	: 8410279327



श्री हरेन्द्र सिंह ग्राम-पट्टी शक्ति, विकास खण्ड- सादाबाद जनपद- हाथरस के प्रगतिशील किसान हैं। इनका परिवार खेती व पशुपालन पर निर्भर है। इनके पास कुल 5.0 हे० कृषि योग्य भूमि है जिसमें पूर्व में ये धान, गेहूँ एवं आलू की खेती के साथ-साथ 1 गाय भी पालते थे। जिससे उनको प्रतिवर्ष ₹0 499000 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री हरेन्द्र सिंह वर्ष 2022 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये, वैज्ञानिकों द्वारा उनकी जरूरत और उनके संसाधन के अनुरूप विभिन्न विषयों पर कृषक प्रशिक्षण, जैविक खेती, खेतों पर जैविक उत्पादों का परीक्षण, जीवामृत, घनजीवामृत, जैविक कीटनाशियों का प्रदर्शन एवं प्रयोग उनके प्रक्षेत्रों पर कराया गया। फसलों की नवीनतम प्रजातियों एवं तकनीकों का परीक्षण एवं प्रदर्शन अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन भी कराये गये। इन परीक्षणों एवं प्रदर्शन के परिणामों को प्रदर्शित करने के लिए प्रक्षेत्र दिवस, चौपाल चर्चा आदि कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया गया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : वर्तमान में श्री सिंह धान, गेहूँ आलू की खेती के साथ-साथ तीन गाय भी पाल रहे हैं जिससे उनकी शुद्ध वार्षिक आय वर्ष 2023-24 में बढ़कर ₹0 1014500 हो गयी। जो कि पूर्व के वर्षों की तुलना में 103 प्रतिशत अधिक है। साथ ही वर्मी कम्पोस्ट व जैविक उत्पादों इत्यादि के प्रयोग से खेती की उर्वरा शक्ति में सुधार हुआ तथा उर्वरकों की लागत में कमी आयी। जहां पर पहले शुद्ध आय ₹0 499000 थी, बढ़कर ₹0 1014500 हो गई। श्री सिंह के द्वारा केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा सुझाए गए विभिन्न कृषि तकनीकों के प्रयोग एवं पशुपालन के साथ वर्मी कम्पोस्ट, नाडेप खाद करने के उपरांत खेती की लागत में कमी आयी साथ ही भूमि में कार्बनिक पदार्थ का स्तर भी बढ़ा जिससे गुणवत्ता युक्त अच्छा उत्पादन भी हुआ।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी का क्षेत्र विस्तार : आस पास के अन्य कृषक भी श्री हरेन्द्र सिंह जी के द्वारा खेती में नवीनतम तकनीकों के प्रयोग से उच्चगुणवत्ता उत्पाद के साथ आय प्राप्त होने से प्रभावित होकर लगभग 170 हेक्टेयर क्षेत्रफल में नवीनतम तकनीकों के साथ खेती कर रहे हैं साथ ही अच्छी नस्ल का पशुपालन भी कर रहे हैं जिससे तकनीकी विस्तार

अब तेजी से हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक बताते हैं कि कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस के कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा नवीनतम कृषि की जानकारी व खेती में उनको अपनाने से फसल उत्पाद अधिक हुआ साथ ही आमदनी भी बढ़ी व जीवन स्तर में सुधार हुआ।



खेती के साथ एग्री-बिजनेस

कृषक का नाम	:	श्री प्रमोद कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री रामजी लाल
ग्राम	:	रुहेरी
विकास खण्ड	:	सासनी
जनपद	:	हाथरस
मोबाइल नंबर	:	9756473792



श्री प्रमोद कुमार गांव—रुहेरी, विकास खण्ड—सासनी, जनपद— हाथरस के प्रगतिशील किसान हैं। इनके पास कुल 0.8 हे० कृषि योग्य भूमि है। जिस पर यह खेती व पशुपालन के साथ-साथ एग्रीबिजनेस का भी कार्य करते हैं। वर्ष 2020 के पूर्व धान एवं गेहूँ की पारम्परिक खेती एवं 1 देशी गाय से इनकी शुद्ध वार्षिक आय रु० 52140 थी।



कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण :

श्री प्रमोद कुमार वर्ष 2022 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों से अपनी आय बढ़ाने के बारे में चर्चा की इसके बाद वैज्ञानिकों द्वारा फसलों की नई प्रजातियों एवं तकनीकियों की जानकारी हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया गया साथ ही उनके संसाधन के अनुरूप विभिन्न विषयों पर कृषक प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन उनके प्रक्षेत्रों पर कराया गया। उनके खेतों पर फसलों की नवीनतम प्रजातियों एवं तकनीकों का परीक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन भी कराये गये। इन परीक्षणों एवं प्रदर्शन के परिणामों को प्रदर्शित करने के लिए प्रक्षेत्र दिवस, चौपाल चर्चा आदि कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया गया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : श्री प्रमोद कुमार जी के द्वारा केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा सुझाए गए विभिन्न कृषि तकनीकों के प्रयोग से 0.8 हे० क्षेत्रफल में गेहूँ के साथ सब्जियों की खेती से रु० 324480 की शुद्ध आय के साथ 522 प्रतिशत पूर्व की आय के सापेक्ष बढ़ोत्तरी हुई साथ ही फसलों के उत्पादों की गुणवत्ता में भी सुधार देखा गया। इनकी पूर्व के वर्षों में शुद्ध आय प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल में रु० 52140 थी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी का क्षेत्र विस्तार: अन्य कृषक भी श्री प्रमोद कुमार जी के द्वारा खेती में नवीनतम तकनीकों के प्रयोग से उच्च आय प्राप्त होने से प्रभावित होकर लगभग 85 हेक्टेयर क्षेत्रफल में नवीनतम तकनीकों के साथ खेती

कर रहे हैं जिससे तकनीकी विस्तार अब तेजी से हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक बताते हैं कि कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस के कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा नवीनतम कृषि की जानकारी व खेती में उनको अपनाने से फसल उत्पाद अधिक हुआ साथ ही आमदनी बढ़ी व जीवन स्तर में सुधार हुआ।



जायद संकर मक्का की नवीनतम तकनीकी से समृद्धि

कृषक का नाम	: श्री तरण वीर सिंह
पिता/पति का नाम	: श्री पुत्तू सिंह
ग्राम	: अफजलपुर
विकास खण्ड	: कासगंज
जनपद	: कासगंज
मोबाइल नंबर	: 9720030723



श्री तरण वीर सिंह ग्राम— अफजलपुर विकास खण्ड, कासगंज के प्रगतिशील कृषक हैं तथा इनके पास खेती योग्य जमीन काफी कम थी। इनकी शुद्ध आय 2019–20 में बहुत कम थी जिससे इनका खर्च मुश्किल से चलता था। वर्ष 2019–20 के पूर्व यह स्थानीय स्तर पर (बीज भण्डार) से बीज क्रय करते थे तथा असंतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करने के साथ-साथ छिटकवों विधि से बुवाई करते थे तथा बीज शोधन भी नहीं करते थे जिससे उनको कम उपज प्राप्त होती थी। सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग न करना, फसल सुरक्षा के लिये समय से रसायनों का प्रयोग न करना तथा समय पर खरपतवारों का नियंत्रण न करने से भी उपज कम होती थी।



कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण : कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के पश्चात् प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनों के माध्यम से इन्होंने अपने खेतों पर संकर मक्का की उच्च उत्पादकता वाली प्रजातियों का उत्पादन शुरू किया। संकर मक्का की बीज दर 20 किग्रा प्रति हे० थी। बुवाई के पूर्व बीजों को 2.5 ग्राम थिरम से प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित किया गया। उर्वरकों की संस्तुत मात्रा 150 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस, 60 किग्रा पोटाश तथा 25 किग्रा जिंक सल्फेट को 10 से 12 टन गोबर की सड़ी खाद के साथ प्रयोग किया तथा बुवाई के पश्चात् पेन्डीमेथिलीन की 3.3 ली० दवा को 600 ली पानी में घोलकर खरपतवारनाशी के रूप में प्रयोग किया। साथ ही तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु फिप्रोनिल 0.3 प्रतिशत ग्रेन्यूल 30 किग्रा प्रति हे० की दर से वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में प्रयोग किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : नवीन तकनीक द्वारा उत्पादित संकर मक्का की कुल लागत ₹0 75387 प्रति हे० थी जिससे 88.70 कु०/हे० उत्पादन प्राप्त हुआ जबकि कृषक की कुल लागत ₹0 70707 प्रति हे०

थी, जिससे कुल उत्पादन 72.62 कु० प्रति हे० प्राप्त हुआ। इस प्रकार कृषक को ₹0 34705 प्रति हे० की अतिरिक्त शुद्ध आय संकर मक्का की नवीनतम तकनीक द्वारा प्राप्त हुई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी का क्षेत्र विस्तार : जायद में संकर मक्का की नवीन तकनीक पर 5 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर कृषि विज्ञान केन्द्र, मोहनपुरा, कासगंज द्वारा वर्ष 2019–20 में प्रदर्शन आयोजित किए गये। तकनीकी की सफलता के दृष्टिगत एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा जागरूकता कार्यक्रम में वर्ष 2019–20 से 2023–2024 तक कृषकों की संख्या 5 से वर्ष दर वर्ष वृद्धि के साथ 52 तक पहुंच गई तथा 35 हे० क्षेत्र में संकर मक्का उगाई जा रही है।

कृषक प्रतिक्रिया: उक्त प्रदर्शनों में फसल की वानस्पतिक वृद्धि एवं फसल में भुट्टे बनने की अवस्था होने पर प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान आसपास के ग्रामों के कृषकों को केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा भ्रमण कराया गया। प्रदर्शनों के अवलोकनोपरान्त कृषकों द्वारा नवाचार तकनीक के प्रचार/प्रसार के लिये सम्बन्धित वैज्ञानिक के प्रयासों एवं परिश्रम को बहुत सराहा गया तथा कृषकों ने आगामी वर्षों में और अधिक क्षेत्रफल में सम्बन्धित तकनीक अपने गाँव में अंगीकृत करने का संकल्प लिया।



फसल चक्र एवं फसल प्रबंधन द्वारा कृषक आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री वकील अहमद
पिता/पति का नाम	:	श्री शमशेर अहमद
ग्राम	:	निजामपुर
विकास खण्ड	:	बावन
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नंबर	:	9648986866



वर्ष 2019-20 से पूर्व श्री वकील अहमद परंपरागत तरीके से धान एवं गेहूँ की खेती करते थे। इनके पास अपना खुद का सिंचाई का साधन उपलब्ध है फिर भी फसल चक्र एवं फसल प्रबंधन का उचित उपयोग नहीं करते थे। जिससे इनकी होने वाली वार्षिक आय बहुत कम होती थी परम्परागत खेती से वर्ष 2019 के पूर्व उनकी कुल शुद्ध आय रु0 58580 थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री वकील अहमद कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा अपने गाँव को अंगीकृत करने के लिए के0वी0के0 के वैज्ञानिकों को कहा तत्पश्चात उनके गाँव निजामपुर में किसानों को विभिन्न विषयों के अंतर्गत कृषक प्रशिक्षण दिया गया साथ ही उनके प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं परीक्षण आयोजित किये गये। साथ ही नवीन प्रजाति के बीजों, उन्नत कृषि तकनीकों, नयी फसलें (खीरा- अगेती आलू + मेंथा + तरबूजा) के साथ फसल चक्र में परिवर्तन, मचान विधि द्वारा खीरा की खेती, आई. डी. एम. व आई. पी. एम. विधि द्वारा फसल में लगने वाले रोगों व कीटों का प्रबंधन इत्यादि की सम्पूर्ण जानकारी भी दी गयी।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2019-20 में श्री वकील अहमद द्वारा परंपरागत तरीके से फसल चक्र में धान व गेहूँ को उगाया था। इन फसलों की खेती से रु0 81217 का आय प्राप्त हुआ। वर्ष 2020-21 में फसल चक्र में मूंगफली को बढ़ाया जिससे कुल आय रु0 87710 मिला। वर्ष 2021-22 में श्री अहमद ने 2.5 एकड़ क्षेत्रफल के फसल चक्र में पांच फसलों को उगाकर अच्छी आमदनी के रूप में कुल रु0 119977 प्राप्त किया। साथ ही साथ ढैंचा की फसल से हरी खाद बनाया। वर्ष 2022-23 में फसल चक्र में नई-नई फसलों का समावेश कर पूरे वर्ष भर फसल उगाई तथा कुल रु0 387702 की शुद्ध आय प्राप्त की। वर्ष 2023-24 में श्री अहमद द्वारा धान की अगेती फसल व भुट्टा के लिए मक्का उगाकर अच्छी आय प्राप्त की तथा फसल चक्र में सात फसलों को शामिल किया। जिसमें नई फसल के रूप में तरबूज को शामिल किया। इस प्रकार से पूरे वर्ष भर कोई भी क्षेत्रफल खाली नहीं रहा। जिससे उनको 2023-24 में कुल आय के रूप में रु0 652545 का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री वकील अहमद द्वारा अपनायी गई नवीनतम नवाचार से ग्राम सभा निजामपुर के कृषकों के अलावा आस पास के गांवों के कृषकों द्वारा भी श्री वकील अहमद द्वारा अपनाई गई तकनीकों को बहुत तेज गति से अपनाया जा रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री वकील अहमद ने कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के द्वारा नवीनतम नवाचार की सारी तकनीकी जानकारी प्राप्त की तथा समय-समय पर वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन, गोष्ठी, मेला इत्यादि में प्रतिभाग के माध्यम से ज्ञान में बढ़ोतरी हुई, जिससे आय में कई गुना वृद्धि हुई।



मूँगफली एवं सब्जी मटर से समृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री अनिल कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री लीलाधर
ग्राम	:	नगरिया पट्टी चाहरम
विकास खण्ड	:	अकराबाद
जनपद	:	अलीगढ़
मोबाइल नंबर	:	9627227375



श्री अनिल कुमार ग्राम—नगरिया पट्टी चाहरम, जनपद—अलीगढ़ के निवासी हैं तथा इनके पास 1.6 हे० कृषि योग्य भूमि है जिस पर यह पारम्परिक रूप से तिल, सरसों एवं गेहूँ इत्यादि की खेती करते थे जिससे इनको विशेष लाभ नहीं मिलता था तथा जायद में कोई भी फसल नहीं उगाते थे। वर्ष 2019–20 में जनपद अलीगढ़ में बहुत ही कम कृषक मूँगफली का उत्पादन करते थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण :

श्री अनिल कुमार कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये एवं खेती की नई तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होंने मूँगफली उत्पादन में विशेष रुचि दिखाई। वर्ष 2020–21 में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा इनके गाँव नगरिया पट्टी चाहरम में 5.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल में मूँगफली की प्रजाति टी०जी० 37ए के समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन 13 कृषकों के प्रक्षेत्र पर समेकित पोषण प्रबन्धन पर आयोजित किये गये। प्रदर्शन फसल में 30.0 कि०ग्रा० प्रति हेक्टेयर की दर से बेंटोनाइट सल्फर एवं 2.0 कि०ग्रा० बोरॉन प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय प्रयोग किया गया। जिसके परिणाम स्वरूप कृषकों ने 29.30 क्विन्टल प्रति हेक्टेयर औसत उपज प्राप्त की।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : इन्हीं 13 कृषकों में एक कृषक श्री अनिल कुमार भी थे। समेकित पोषण प्रबन्धन का ध्यान रखते हुए खरीफ में तिल, रबी में सरसों व जायद में मूँगफली की फसल लिया जिससे प्रति हे० शुद्ध लाभ रु० 124000 हुआ। वर्ष 2023–24 में फसल चक्र मूँगफली—सब्जी मटर—मूँगफली से श्री अनिल कुमार ने प्रति हेक्टेयर रु० 345000 शुद्ध लाभ प्राप्त किया। आय बढ़ने से श्री अनिल ने अन्य किसानों की 6.4 हे० भूमि भी पट्टे पर ली एवं पशुओं की संख्या भी बढ़ा ली है जिससे इनको अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र

विस्तार : श्री अनिल कुमार की आर्थिक सफलता को देखते हुये अन्य कृषक भी मूँगफली—सब्जी मटर—मूँगफली फसल चक्र अपनाने की ओर आकर्षित हो रहे हैं जिससे जनपद में प्रति वर्ष मूँगफली का क्षेत्रफल बढ़ता जा रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक श्री अनिल कुमार केन्द्र द्वारा बतायी गयी फसल चक्र एवं उत्पादन तकनीकी से पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं। वह अन्य कृषकों को भी इस तकनीकी को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।



प्याज की खेती से आत्मनिर्भर हुये किसान

कृषक का नाम	:	श्री कोपेन्द्र सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री मूलचन्द
ग्राम	:	कांतौर
विकास खण्ड	:	कासगंज
जनपद	:	कासगंज
मोबाइल नंबर	:	9897588835



श्री कोपेन्द्र सिंह वर्ष 2019-20 में स्थानीय दुकानदार से बीज क्रय करके बुवाई करते थे तथा संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरकों, सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग नहीं करते थे तथा पौध उत्पादन हेतु पारम्परिक विधि का प्रयोग करते थे तथा समय पर खरपतवार प्रबन्धन भी नहीं करते थे जिसके कारण उनकी कुल शुद्ध आय रु0 171000 प्रति हे0 प्राप्त होती थी। पौध तैयार के साथ ही कृषकों के बीच प्रचार-प्रसार हेतु खरीफ प्याज उत्पादन पर प्रशिक्षण आयोजित कराया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : वर्ष 2022 में श्री कोपेन्द्र सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा नई फसलों एवं प्रजातियों के उगाने के बारे में प्रशिक्षण प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की तत्पश्चात केन्द्र द्वारा इनको खरीफ प्याज उत्पादन पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा इनके खेत पर खरीफ प्याज की उन्नतशील प्रजाति भीमा सुपर का प्रदर्शन भी आयोजित कराया गया। श्री कोपेन्द्र सिंह ने वर्ष 2022-23 में भीमा सुपर प्रजाति को 50 टन सड़ी गोबर की खाद, 100 किग्रा यूरिया, 300 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट व 100 किग्रा म्यूरेंट आफ पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से रोपाई के समय तथा रोपाई के 4 सप्ताह बाद 100 किग्रा0 यूरिया टाप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग किया। पौध उत्पादन उठी हुई क्यारियों में कराया गया और खरपतवार नियन्त्रण हेतु समय से निराई-गुड़ाई कराई गयी।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत प्याज की भीमा सुपर प्रजाति को लगाने से उनको प्रति हे0 रु0 222000 की शुद्ध आय प्राप्त हुई जो कि पूर्व के वर्षों की तुलना में रु0 51000 प्रति हे0 अधिक थी।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी / क्षेत्र विस्तार : कृषक श्री कोपेन्द्र सिंह के प्रक्षेत्र पर वैज्ञानिक विधि से खेती करने से प्रभावित होकर खरीफ प्याज 18 कृषकों द्वारा 6 हेक्टेयर क्षेत्रफल में अपनायी गयी है और भविष्य में खरीफ प्याज का क्षेत्रफल बढ़ने की सम्भावना है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक श्री अनिल कुमार बतायी गयी फसल चक्र एवं उत्पादन तकनीकी से पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं वे अन्य कृषकों को भी इस तकनीकी को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।



गेहूँ में पोषक प्रबन्धन से मिला लाभ

कृषक का नाम	:	श्री फतेह सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री वीर पाल सिंह
ग्राम	:	कलुआ
विकास खण्ड	:	लोधा
जनपद	:	अलीगढ़
मोबाइल नंबर	:	8006517318



श्री फतेह सिंह ग्राम—कलुआ विकास खण्ड लोधा, जनपद अलीगढ़ के निवासी हैं इनके पास कुल 1.6 हे० कृषि योग्य भूमि है जिस पर वह वर्ष 2019–20 में धान, गेहूँ इत्यादि फसलों की पारम्परिक खेती करते थे तथा असंतुलित उर्वरकों का प्रयोग करते थे तथा बिना कीट व रोग प्रकट हुए कीटनाशकों का प्रयोग करते थे जिससे उनकी फसल में अधिक बीमारियाँ लगती थीं व लागत अधिक आती थी एवं उत्पादन कम होता था जिससे उनको प्रति हे० मात्र रु० 45300 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री फतेह सिंह 2020 में केवीके, अलीगढ़ के संपर्क में आए और फसलों की नवीनतम प्रजातियों एवं तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसके पश्चात वह गेहूँ की फसल के साथ—साथ अन्य फसलों में भी मिट्टी परीक्षण के अनुसार पोषक तत्व प्रबंधन अपनाने लगे। एन०पी०के० उर्वरकों का प्रयोग और जिंक की कमी होने पर जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का 45, 60 और 75 दिनों के अन्तराल पर तीन बार प्रयोग किया साथ ही 12.5 टन गोबर की खाद या 2.5 टन वर्मी कम्पोस्ट प्रति हेक्टेयर प्रयोग किया, जिससे उनकी फसलों की उपज बढ़ी। साथ ही नई प्रजातियों का प्रयोग के०307 (शताब्दी), एच० डी० 2967 और डी० डब्ल्यू० आर० 187, और डी० डब्ल्यू० आर० 303 जैसी किस्मों तथा उपयुक्त खरपतवारनाशी व फफूंदनाशी का प्रयोग किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बताई गयी तकनीक एवं नई प्रजातियों के चयन तथा गेहूँ में स्पेसिफिक पोषक तत्व प्रबंधन से श्री सिंह की शुद्ध आय जो 2019–20 में रु० 45300 प्रति हे० थी, वह 2023–24 में बढ़कर रु० 82500 प्रति हे० हो गयी। इस प्रकार तकनीक हस्तांतरण के उपरांत उनकी आय में रु० 37200 की प्रति हे० की वृद्धि हुई।



अन्य किसानों द्वारा अपनाई गई तकनीक/क्षेत्र विस्तार: श्री फतेह सिंह द्वारा अपनायी गयी तकनीक से प्रभावित होकर लगभग 550 से अधिक किसानों ने अपनी भूमि में गेहूँ के लिए अनुशंसित उचित पोषक तत्व की मात्रा को अपनाया। इस तकनीक का विस्तार जनपद के 3600 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल में हो गया है।



फूलगोभी की खेती से आय वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री जवाहर सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री गनपत सिंह
ग्राम	:	अशोक नगर, सराय लबरिया
विकास खण्ड	:	अलीगढ़
जनपद	:	अलीगढ़
मोबाइल नंबर	:	9368071729



श्री जवाहर सिंह ग्राम-अशोक नगर, सराय लबरिया के निवासी हैं तथा इनके पास कुल 1.2 हे० कृषि योग्य भूमि है जिस पर यह 2019-20 से पहले फूलगोभी की पारंपरिक खेती करते थे तथा खराब फसल प्रबंधन के कारण उनकी फसल की उपज कम थी तथा गुणवत्ता खराब थी जिससे उनको मात्र 137 कु०/हेक्टेयर उपज प्राप्त होती थी जबकि कुल लागत रु० 115000 प्रति हेक्टेयर आती थी जिससे उनको बहुत कम शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण :

श्री जवाहर सिंह 2022-23 में के०वी०के०, अलीगढ़ के सम्पर्क में आये एवं वहाँ से सब्जी पौध उत्पादन, नर्सरी उत्पादन तथा फसलों की नवीनतम प्रजातियों एवं तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया, साथ ही उनके प्रक्षेत्रों पर नई फसलों एवं तकनीकों के प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिससे प्रभावित होकर इन्होंने अपने प्रक्षेत्र पर सितंबर में फूलगोभी की प्रजाति पूसा स्नोबल के-1 को उगाया और वैज्ञानिक प्रबंधन के साथ जनवरी से अप्रैल के महीने में अपनी फसल तैयार की। इस बीच उन्होंने केवीके अलीगढ़ की सहायता से मार्केटिंग लिंकेज की पहचान की और अपनी फूलगोभी को स्थानीय और दिल्ली के बाजारों में अधिक मूल्य पर बेचा।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण: इस प्रकार वर्ष 2023-24 में फूलगोभी उत्पादन की पूर्ण प्रौद्योगिकी अपनाने से इन्हें 330 कु०/हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त हुआ तथा कुल सकल आय रु० 330000 प्राप्त हुई जबकि कुल व्यय घटकर रु० 76400 रह गया। इस प्रकार इनका शुद्ध लाभ प्रति हे० रु० 253600 हो गया जो कि पूर्व वर्ष की तुलना में बहुत अधिक था।

अन्य किसानों द्वारा अपनाई गई तकनीक/क्षेत्र विस्तार : इस किसान की सफलता को देखते हुए, गांव के 14 किसानों और आसपास के गांवों के 28 किसानों ने कुल 255-370 हेक्टेयर में फूलगोभी की खेती के साथ-साथ अन्य सब्जियों की खेती भी की है। क्षेत्र में फूलगोभी का रकबा तेजी से बढ़ रहा है।



खेती एवं मधुमक्खी पालन से आय वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री आलोक कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री शिवनन्दन प्रसाद
ग्राम	:	पचोर
विकास खण्ड	:	कन्नौज
जनपद	:	कन्नौज
मोबाइल नंबर	:	9628961339



श्री आलोक कुमार ग्राम पचोर जनपद-कन्नौज के निवासी हैं इनके पास कुल 0.4 हे0 कृषि योग्य भूमि है तथा वर्ष 2019-20 में आलू, मक्का, धान एवं गेहूँ फसलों की पारम्परिक रूप से खेती करते थे एवं एक भैंस भी पालते थे जिससे इनको ₹0 86692 की शुद्ध आमदनी प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए केन्द्र द्वारा सुझायी गयी उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाना शुरू किया। साथ-साथ कृषि विविधीकरण के आयाम मधुमक्खी पालन का कार्य भी वर्ष 2021 में 15 बक्सों से केन्द्र के मार्गदर्शन में प्रारम्भ किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : धीरे-धीरे बक्से बढ़ाकर वर्ष 2023-24 में उक्त किसान 150 मधुमक्खी के बक्सों का संचालन कर रहे हैं। जिससे कृषि के साथ-साथ, एक भैंस के पालन एवं मधुमक्खी पालन के द्वारा वर्ष 2023-24 में इनको ₹0 225000 की शुद्ध आय प्राप्त हुई। जो कि पूर्व के वर्ष की तुलना में ₹0 138308 अधिक है। इससे यह अपना जीवन यापन अच्छे से व्यतीत कर रहे हैं।

अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार: श्री आलोक कुमार की सफलता को देखते हुए आस-पास के

किसान इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुए हैं एवं कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रेरणा लेकर जनपद के राजपुर, हाथिन, मेरा आदि गावों के किसानों ने भी खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया है।

कृषक प्रतिक्रिया : खेती व पशुपालन के साथ मधुमक्खी पालन से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हुई। कृषि विज्ञान केन्द्र से सीधे जुड़ने से लाभ ही लाभ मिला।



वैज्ञानिक खेती से समृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री अनार सिंह
पिता/पति का नाम	:	स्व श्री राम भरोसे
ग्राम	:	नगला भजन
विकास खण्ड	:	सुल्तानगंज
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नंबर	:	7055636415



श्री अनार सिंह ग्राम—नगला भजन, सुल्तानगंज के प्रगतिशील कृषक हैं तथा उनके पास कुल 5.0 हे० कृषि योग्य भूमि है जिस पर यह वर्ष 2019—20 में पारम्परिक तरीके से 05 हे० क्षेत्र में गेहूँ, सरसों, आलू, मक्का, बाजरा एवं मूँगफली की खेती करते थे तथा बकरी पालन एवं भैंस पालन भी करते थे जिससे सकल आय ₹0 2108290 प्राप्त कर रहे थे तथा कुल शुद्ध आय ₹0 1408305 प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री अनार सिंह वर्ष 2021—22 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये केन्द्र के वैज्ञानिकों से अपनी आय बढ़ाने के बारे में चर्चा की इसके बाद केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा फसलों की नई प्रजातियों एवं तकनीकियों की जानकारी हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया गया, साथ ही उनके संसाधन के अनुरूप विभिन्न विषयों पर कृषक प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन उनके प्रक्षेत्रों पर कराया गया। साथ ही खेतों पर फसलों की नवीनतम प्रजातियों एवं तकनीकों का परीक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन भी कराये गये। इन परीक्षणों एवं प्रदर्शन के परिणामों को प्रदर्शित करने के लिए प्रक्षेत्र दिवस, चौपाल चर्चा आदि कार्यक्रमों का आयोजन समय—समय पर किया गया। जिनका प्रयोग वह अपनी खेती में कर रहे हैं।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बताई गयी तकनीक एवं नई प्रजातियों के चयन से कुल सकल आय ₹0 3289825 प्राप्त हुई जबकि कुल शुद्ध आय ₹0 2500472 प्राप्त हुई जो कि पूर्व वर्ष की तुलना में बहुत अधिक थी।

अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री अनार सिंह की सफलता को देखते हुए आस—पास के किसान इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुए हैं एवं कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रेरणा लेकर जनपद के किसानों में बड़ी मात्रा में बीज शोधन का चलन बढ़ा है। आज किसान स्वयं ही दीमक आदि कीड़ों के नियंत्रण के साथ ही कार्बेन्डाजिम



आदि से अपने बीजों का शोधन करने लगे हैं। वहीं बड़ी मात्रा में किसानों में द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रति रुझान बढ़ा है। जहां किसान पहले पोषक तत्वों की कमी के लक्षणों को ईश्वरीय प्रकोप मान छोड़ देते थे वही किसान आज सल्फर, जिंक, बोरोन आदि का प्रयोग करने लगे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : किसान श्री अनार सिंह जी की प्रगति देख कर सुझाई गई तकनीकों में खासकर खाद्यान्न फसलों में सीड ड्रिल का प्रयोग करते हुए कतार में बुवाई करने लगे हैं तथा नई तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।



वैज्ञानिक खेती से आर्थिक उन्नति

कृषक का नाम	: श्री जयवीर सिंह
पिता/पति का नाम	: श्री मुकट सिंह
ग्राम	: बुटहर सरावों
विकास खण्ड	: भरथना
जनपद	: इटावा
मोबाइल नंबर	: 790632809



श्री जयवीर सिंह, इटावा के ग्राम—बुटहर सरावों के प्रगतिशील कृषक हैं। इनके पास कुल 4.0 हे० कृषि योग्य भूमि है जिस पर यह धान, गेहूँ, आलू एवं सब्जियों की पारम्परिक खेती करते थे। जिससे वर्ष 2019–20 में धान—गेहूँ फसल चक्र अपनाकर साधारण बीजों एवं प्रजाति का उपयोग कर रु० 517000 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे थे जो कि कम थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : तत्पश्चात् श्री सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये और केन्द्र के वैज्ञानिकों से विभिन्न विधाओं के माध्यम से तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही नई प्रजातियों और तकनीकों को अपनी खेती में अपनाया और विविधीकरण भी अपनाया जिसमें धान गेहूँ के साथ—साथ आलू एवं टमाटर की उन्नत एवं संकर प्रजातियों को अपनाया। साथ ही एक भैंस तथा 4 बरबरी बकरियाँ भी पालीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने 100 वर्ग मी० क्षेत्र में चन्दन के पौधों का रोपण किया। उन्होंने पराली प्रबन्धन के लिए फसल अवशेष प्रबन्धन विधि को भी केन्द्र के मार्गदर्शन में अपनाया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बताई गयी तकनीक एवं नई प्रजातियों के चयन, पशुपालन एवं बकरी पालन एवं पराली प्रबन्धन से श्री सिंह को वर्ष 2023–24 में कुल सकल आय रु० 1374000 प्राप्त हुई जबकि कुल शुद्ध आय रु० 1077000 जो कि पूर्व वर्ष की तुलना में दो गुनी अधिक थी।

अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री सिंह की सफलता को देखते हुए क्षेत्र के आस—पास के अन्य कृषक भी पराली प्रबन्धन को अपना रहे हैं एवं बकरी पालन की ओर आकर्षित हो रहे हैं जिससे इसका विस्तार आस—पास के 20–25 गाँव में हो गया है।

कृषक प्रतिक्रिया : पराली प्रबन्धन एवं पशुपालन से खेती में लाभ हो रहा है एवं इसका प्रचार—प्रसार भी आस—पास के गाँवों में हो रहा है तथा बाजार की माँग के अनुसार खेती अपनाकर आय में वृद्धि हुई।



सरसों की खेती से कृषक समृद्धि

कृषक का नाम	: श्री पवन राघव
पिता/पति का नाम	: श्री राम निवास
ग्राम	: लहटोई
विकास खण्ड	: जवां
जनपद	: अलीगढ़
मोबाइल नंबर	: 7500540810



श्री पवन राघव ग्राम-लहटोई, अलीगढ़ के प्रगतिशील कृषक हैं इनके पास कुल 2.0 हे० कृषि भूमि है। वर्ष 2019-20 के दौरान वह सरसों की स्थानीय किस्म पीतांबरी तथा वरुणा की बुआई छिटकवाँ विधि द्वारा करते थे। इन प्रजातियों की उपज कम होने के कारण इनकी आय बहुत कम थी जिससे उनको 02 हे० भूमि पर सरसों से शुद्ध आय मात्र रू० 26653 प्रति हे० प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री पवन राघव वर्ष 2021 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों से अपनी आय बढ़ाने के बारे में चर्चा की। इसके बाद केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा फसलों की नई प्रजातियों एवं तकनीकियों की जानकारी हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया गया साथ ही केवीके अलीगढ़ द्वारा सरसों की वैज्ञानिक खेती के संबंध में पवन राघव को जागरूक किया गया। कृषक प्रशिक्षण एवं मिट्टी परीक्षण के लिए प्रोत्साहित किया और उसके आधार पर किसान को उच्च उपज देने वाली किस्मों आर०एच० 749 एवं डी०आर०एम०आर० 1165-40 प्रजातियों का प्रदर्शन उर्वरकों की संस्तुत मात्रा (एन०पी०के०एस० 120:40:40:30) का प्रयोग भी उनके प्रक्षेत्र पर कराया गया। इसके अतिरिक्त उनकी फसल के अनुरूप समय-समय पर कीटनाशकों की संस्तुत मात्रा का प्रयोग भी फसल में कराया गया जिससे 2.0 हे० क्षेत्र से उनको अधिक लाभ प्राप्त हुआ।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बताई गयी तकनीक एवं नई प्रजातियों के चयन तथा वैज्ञानिकों के सुझाव के अनुसार सरसों की फसल में संतुलित उर्वरकों एवं उचित समय पर कीटनाशी, खरपतवार नाशी व उचित फफूंद नाशक के प्रयोग से सरसों की उत्पादकता में वृद्धि हुई। वर्ष 2019-20 में उनकी उपज में 14.16 कु० प्रति हे० तथा शुद्ध आय रू० 26653 प्रति हे० थी जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर 25.45 कु० प्रति हे० हो गयी जिससे कुल सकल आय रू० 143792 प्राप्त हुई जबकि कुल लागत रू० 72659 आयी इस प्रकार उनकी शुद्ध आय रू० 71132 प्रति हे० हो गयी जो कि पूर्व की तुलना में रू० 44479 प्रति हे० अधिक थी।



अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार: श्री पवन राघव द्वारा सरसों की उच्च उपज देने वाली किस्मों आर०एच० 749 एवं डी०आर०एम०आर० 1165-40 प्रजातियों को अपनाने से उपज में हुई वृद्धि को देखते हुए क्षेत्र के आस-पास के 650 अन्य कृषक भी इस प्रजाति को अपनाने लगे हैं। जिससे इसका विस्तार आस-पास के 4200 हे० में हो गया है।

कृषक प्रतिक्रिया : उच्च उपज देने वाली किस्मों आर०एच० 749 एवं डी०आर०एम०आर० 1165-40 प्रजातियों को अपनाने से खेती में लाभ हो रहा है एवं आय में वृद्धि हुई है।



सब्जी उत्पादन से आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री बबलू खान
पिता/पति का नाम	:	श्री सलीम खान
ग्राम	:	निजामपुर
विकास खण्ड	:	बावन
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नंबर	:	8400387844



श्री बबलू खान ग्राम-निजामपुर, हरदोई के प्रगतिशील कृषक हैं इनके पास कुल 1.25 हे० कृषि योग्य भूमि है जिससे वर्ष 2019-20 में परम्परागत खेती से इनको कुल शुद्ध वार्षिक आय रु० 178606 प्राप्त हो रही थी जो कि बहुत कम थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री बबलू खान कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा अपने गाँव को अंगीकृत करने के लिए के०वी०के० के वैज्ञानिकों को कहा तत्पश्चात उनके गाँव निजामपुर में किसानों को विभिन्न विषयों के अंतर्गत कृषक प्रशिक्षण दिया गया, साथ ही उनके प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं परीक्षण आयोजित किये गये। नवीन प्रजाति के बीजों, उन्नत कृषि तकनीकों, नयी फसलों (खीरा- अगेती आलू+ सब्जी मटर, -करेला + तरबूजा) के साथ फसल चक्र में परिवर्तन, मचान विधि द्वारा खीरा व करेला की खेती एवं आई. डी. एम. व आई. पी. एम. विधि द्वारा फसल में लगने वाले रोगों व कीटों का प्रबंधन इत्यादि की सम्पूर्ण जानकारी भी दी गयी।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2019-20 में श्री बबलू खान द्वारा परंपरागत तरीके से फसल उगायी जाती थीं। इन फसलों की खेती से रु० 178606 की वार्षिक आय प्राप्त होती थी। फसल चक्र में नयी फसलों (खीरा- अगेती आलू + सब्जी मटर, -करेला + तरबूजा) एवं तकनीकों के समावेश एवं नवीनतम फसल चक्र व आई. डी. एम. व आई. पी. एम. विधि से वर्ष 2023-24 में श्री खान के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि हुई, साथ ही वार्षिक आमदनी में भी रु० 609067 की वृद्धि हुई।



अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार:

श्री बबलू खान द्वारा अपनाई गई नवीनतम नवाचार से निजामपुर के कृषकों के अलावा आस पास के गांवों के कृषकों द्वारा भी श्री बबलू द्वारा अपनाई गई तकनीकों को बहुत तेज गति से अपनाया जा रहा है। वर्तमान में अमर उजाला की टीम द्वारा बबलू खान के द्वारा अपनाई गई तकनीकी को कवर करके सोशल मीडिया के माध्यम से अन्य कृषकों के लिए प्रचार प्रसार का कार्य किया जा रहा है, जो प्रदेश के कृषकों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा उपलब्ध करायी गयी उन्नत तकनीकों एवं नई फसलों के समावेश से तथा मचान विधि से खीरा की खेती करने से आय में बहुत अधिक वृद्धि हुई है, साथ ही कृषि ज्ञान में बढोत्तरी हुई है।



सब्जी उत्पादन से आर्थिक उन्नति

कृषक का नाम	:	श्री राधा मोहन
पिता/पति का नाम	:	श्री राम प्रसाद
ग्राम	:	जैतपुर
विकास खण्ड	:	बढपुर
जनपद	:	फर्रुखाबाद
मोबाइल नंबर	:	8707636927



श्री राधा मोहन, ग्राम—जैतपुर बढपुर, फर्रुखाबाद के प्रगतिशील कृषक हैं। इनके पास कुल 0.4 हे० कृषि योग्य भूमि है एवं सिंचाई हेतु ट्यूबवेल की व्यवस्था है। यह वर्ष 2021–22 से पूर्व अपने खेत में मक्का, गेहूं तथा आलू फसल का उत्पादन करते थे। जिसकी लागत रु० 105000 आती थी तथा कुल उत्पादन मूल्य रु० 180000 प्राप्त हो रहा था जिससे शुद्ध लाभ मात्र रु० 75000 प्राप्त हो रहा था। श्री राधा मोहन को इस तरह के फसल चक्र से साल भर मेहनत करने के बावजूद बहुत कम आय प्राप्त होती थी तथा इन्हें अपने परिवार के भरण पोषण करने में कठिनाई आती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण का विस्तृत विवरण : वर्ष 2022 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फर्रुखाबाद के वैज्ञानिक भ्रमण के दौरान उनके गांव जैतपुर पहुंचे वहां इन्होंने अपनी आय बढ़ाने के उपाय वैज्ञानिकों से पूछे। इनके संसाधनों के अनुरूप इन्हें सब्जियों की खेती की सलाह के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र में बुलाकर कम लागत के फसल सुरक्षा साधनों के साथ-साथ सब्जी उत्पादन एवं बाजार प्रबंधन की संपूर्ण जानकारी प्रशिक्षण के माध्यम से प्रदान की गयी। इसके उपरांत श्री राधा मोहन ने अपने खेत में बैंगन एवं मिर्च की खेती करने की योजना बनाई। प्रशिक्षण के दौरान अच्छी प्रजातियों के साथ फसल सुरक्षा एवं पोषक तत्व के समन्वित प्रबंधन में उपयोगी साधनों को अपनाने की जानकारी दी गई। श्री राधा मोहन ने वर्ष 2022–23 में वीएनआर कंपनी के एफ 1 हाइब्रिड बीज प्रजाति वीएनआर 212 एवं मिर्च की प्रजाति सिंजेंटा एच पी एच 5531 के बीज से लोटनल पाली हाउस में नर्सरी तैयार की तथा लागत कम करने हेतु जीवामृत, नीम पत्ती सत एवं फेरोमोन ट्रैप आदि का उपयोग करते हुए बैंगन की फसल 3.4 हे० एवं मिर्च 0.8 हे० क्षेत्रफल में उगायी।



तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2022–23 में कुल रुपए 175000 की लागत लगाकर 10 कुंतल मिर्च के उत्पादन से रु० 80000 एवं 240 कुंतल बैंगन के उत्पादन से रु० 480000 मिलाकर कुल आय रु० 560000 प्राप्त हुई। इस प्रकार प्रथम वर्ष में ही लागत को हटाकर रु० 385000 की शुद्ध आय प्राप्त हुई। जो कि पूर्व के वर्ष की तुलना में रु० 310000 अधिक थी।

अन्य कृषको द्वारा अपनाई गई तकनीकी / क्षेत्र विस्तार : श्री राधा मोहन द्वारा सब्जी उत्पादन की आमदनी से प्रभावित होकर क्षेत्र के 18 अन्य किसानों ने लगभग 26 एकड़ क्षेत्र में सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू कर दिया है।



कृषक प्रतिक्रिया : श्री राधा मोहन कहते हैं कि सब्जी उत्पादन एवं बाजार तक विक्रय की व्यवस्था में मेरे परिवार के अन्य सदस्य भी सहयोग करते हैं। सब्जी की खेती से वर्ष भर आमदनी मिलती रहती है तथा प्राप्त आय से बच्चों की पढ़ाई व घर परिवार का पूरा खर्च एवं सभी जरूरतों की पूर्ति हो जाती है। सब्जी उत्पादन के लाभ से हमारा जीवन सरल हो गया है तथा हम खुश हैं। छोटी जोत वाले किसानों को अधिक लाभ कमाने के लिए गेहूं, मक्का एवं आलू की खेती के साथ ही सब्जियों का उत्पादन जरूर करना चाहिए।



कृषि में यंत्रीकरण से सफलता

कृषक का नाम	:	दामोदर सिंह
पिता/पति का नाम	:	मुकुट सिंह
ग्राम	:	अमृतपुर
विकास खण्ड	:	बसरेहर
जनपद	:	इटावा
मोबाइल नंबर	:	9528567191



श्री दामोदर सिंह, ग्राम अमृतपुर, बसरेहर, इटावा के किसान हैं। जो परम्परागत रूप से 0.8 हे० क्षेत्र पर फसलों की खेती करते थे जिससे उनको प्रतिवर्ष रू० 62000 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी जो कि कम थी तथा परिवार का भरण पोषण करने में कठिनाई होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण का विस्तृत विवरण : श्री दामोदर सिंह, कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये। वैज्ञानिकों द्वारा इनको प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनों के माध्यम से नई कृषि तकनीकियों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा खेती में यंत्रीकरण के बारे में भी विस्तार से जानकारी प्रदान की गयी। जिसके पश्चात इन्होंने कृषि कार्य हेतु रोटोवेटर एवं सीडड्रिल का प्रयोग करना शुरू कर दिया।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण : तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त कृषक की आय 2019-20 से पहले 2.0 एकड़ क्षेत्रफल से प्रतिवर्ष रू० 62000 थी, वहीं रोटोवेटर एवं सीडड्रिल के प्रयोग से कृषक की आय में 2023-24 में रू० 130000 प्रतिवर्ष हो गयी है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : रोटोवेटर एवं सीडड्रिल का प्रयोग जिले के अन्य किसानों ने भी किया और अपनी आय को बढ़ाया। जिले में 100 हे० में रोटोवेटर और सीडड्रिल का प्रयोग, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से किसानों तक वर्ष 2023-24 तक पहुँचा। कृषक दामोदर सिंह ने अपने खेतों के साथ-साथ, आसपास के किसानों के खेतों में भी रोटोवेटर एवं सीडड्रिल का प्रयोग करवाया।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक श्री दामोदर सिंह के अनुसार रोटोवेटर के प्रयोग से खेत अच्छे से तैयार हो जाता है। सीडड्रिल के प्रयोग से बीज व खाद कम लगती है और उत्पादन अधिक होता है।



सब्जी उत्पादन से आर्थिक समृद्धि

कृषक का नाम	:	श्रीमती बबिता देवी
पति का नाम	:	श्री राजीव कुमार
ग्राम	:	महेशपुर
विकास खण्ड	:	कुम्भी गोला
जनपद	:	लखीमपुर खीरी
मोबाइल नंबर	:	8009191092

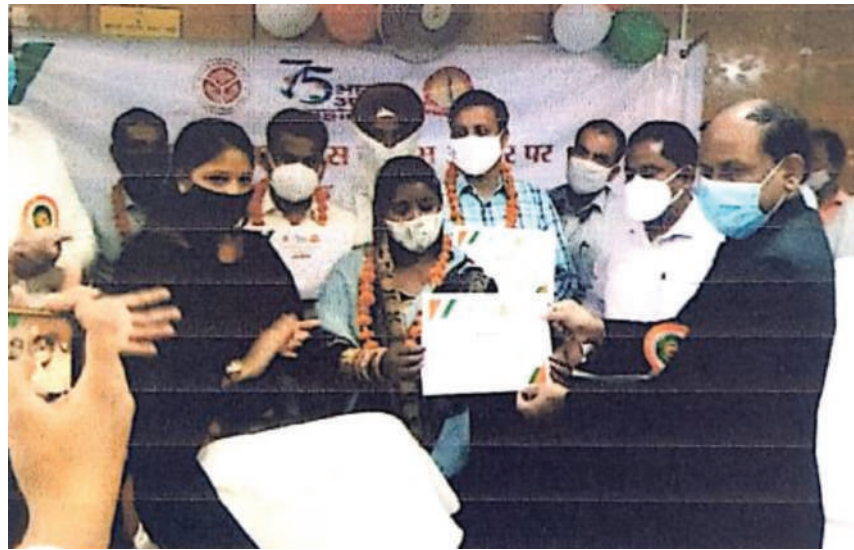


श्रीमती बबिता देवी वर्ष 2019-20 में 0.4 एकड़ में सब्जियों की खेती तथा भैंस पालन से प्रति वर्ष रु0 40000 आय प्राप्त करती थीं।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण—वर्ष 2020-21 में कृषि विज्ञान केन्द्र के संपर्क में आने के पश्चात उन्होंने सब्जी उत्पादन एवं मसाला फसलों व अन्य विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा वैज्ञानिकों द्वारा उनके प्रक्षेत्र पर नवीनतम सब्जियों की प्रजातियों के प्रदर्शन कराए गए। तत्पश्चात अधिक आय प्राप्त होने पर उन्होंने इन तकनीकियों को अपनाना शुरू किया साथ ही फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, महेशपुर, गोला, लखीमपुर खीरी भी स्थापित किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय-व्यय का विवरण:— वर्ष 2023-24 में इन्हें कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पाली हाउस में अगेती फूल गोभी की पौध, शिमला मिर्च की उत्पादन तकनीक, कुटीर उद्योग



एवं फार्मर्स प्रोड्यूसर आर्गनाइजेशन के विषय में भी जानकारी दी गयी। जिसके कारण श्रीमती बबिता देवी के द्वारा खेती से रु0 65000 तथा कुटीर उद्योग से रु0 35000 की आय प्राप्त की गयी। इस प्रकार तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत इनकी शुद्ध आय में रु0 60000 की वृद्धि हुयी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार— श्रीमती बबिता देवी के द्वारा 50 कृषकों एवं कृषक महिलाओं में उपरोक्त तकनीक का प्रचार-प्रसार किया गया जिस कारण लगातार आय में वृद्धि हो रही है। सामाजिक एवं आर्थिक जीवन स्तर में वृद्धि के साथ अपने कृषि

आधारित उद्यमों से पूर्णतया संतुष्ट हैं। विभिन्न स्तरों से आपको सम्मानित भी किया जा चुका है।



पशुपालन: आर्थिक उन्नति का साधन

कृषक का नाम	:	श्रीमती लता चौहान
पति का नाम	:	श्री सुरेन्द्र चौहान
ग्राम	:	मोहनपुरा
विकास खण्ड	:	कासगंज
जनपद	:	कासगंज
मोबाइल नंबर	:	8954327118



श्रीमती लता चौहान 2022 के पूर्व खेती के साथ-साथ 1 गाय तथा 1 भैंस का पालन करती थीं। जिससे उनको प्रति वर्ष रू0 30000 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण: नवम्बर, 2022 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मोहनपुरा, कासगंज से व्यावसायिक डेयरी फार्मिंग का 05 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें पशु प्रबंधन, आवास प्रबंधन, आहार प्रबंधन, नस्ल प्रबंधन, बॉझपन प्रबंधन एवं बीमारियों का प्रबंधन प्रमुख विषय थे।



तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय-व्यय का विवरण: तत्पश्चात् श्रीमती चौहान ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मोहनपुरा, कासगंज के तकनीकी सहयोग से डेयरी फार्मिंग का व्यवसाय 05 दुधारु जानवरों (03 मुरा भैंस एवं 02 संकर गाय) के साथ प्रारंभ किया। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई। वर्तमान में श्रीमती चौहान के पास पाँच दुधारु पशु हैं जिससे उनको प्रतिवर्ष रू0 201000 की शुद्ध आय प्राप्त हो रही है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार— श्रीमती लता चौहान की सफलता के उपरांत क्षेत्र के 14 कृषकों द्वारा डेयरी फार्मिंग व्यवसाय तकनीक को अपनाया गया है जिससे अधिक आय प्राप्त कर रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया: श्रीमती लता चौहान अपने पति श्री सुरेन्द्र चौहान एवं परिवार के साथ मिलकर डेयरी फार्मिंग व्यवसाय करती हैं एवं प्राप्त अधिक आय से अपना घर खर्च चलाती हैं तथा बच्चों की शिक्षा पर खर्च करती हैं। डेयरी फार्मिंग व्यवसाय के कारण खेती से प्राप्त आय की पूरी बचत हो जाती है जिससे श्रीमती चौहान खुश हैं।



प्रसंस्करण द्वारा आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्रीमती उमा सारस्वत
पति का नाम	:	श्री विनय कुमार शर्मा
ग्राम	:	धरमई
विकास खण्ड	:	अरांव
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नंबर	:	9997267652



श्रीमती उमा सारस्वत ग्राम—धरमई, विकास खण्ड—अरांव की रहने वाली हैं। इनकी शैक्षिक योग्यता बी०ए० है। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी जिससे वह चिन्तित रहती थीं। इनके पास मात्र 0.5 हे० खेती योग्य जमीन थी जिसमें वह बाजरा व गेहूँ की खेती करके रू० 59175 की शुद्ध आय प्राप्त कर रही थीं।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण: वर्ष 2019-20 में कृषि विज्ञान केन्द्र के संपर्क में आयीं तत्पश्चात उन्होंने वहाँ से फल एवं सब्जी प्रसंस्करण के अन्तर्गत अचार, मुरब्बा, जैम—जैली, स्कवैस आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अपना व्यवसाय शुरू किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय—व्यय का विवरण: प्रशिक्षण उपरान्त धरेलू स्तर पर अचार, मुरब्बा बनाया तथा इसके साथ ही हवन सामग्री, गुलाल, धूप बत्ती आदि भी बनाना शुरू कर दिया, जिसे स्थानीय बाजार की दुकानों में बिक्री कर प्रत्येक माह औसतन रू० 4000 से 5000 तक की आमदनी हो जाती है जिससे वह अपने घर के दैनिक खर्चों की पूर्ति कर लेती हैं और आगे भी इसी कार्य को वृहद स्तर पर करना चाहती हैं।



वर्तमान (2023-24) में वह बाजरा, गेहूँ की खेती के साथ—साथ अचार उद्योग व प्रसंस्करण द्वारा रू० 131200 की शुद्ध आय प्राप्त कर रही हैं।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार—ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं को रोजगार से जोड़ने के लिये एवं अर्थिक स्तर में सुधार के लिये ग्राम धरमई की महिलाओं को अचार, मुरब्बा, जैम—जैली, स्कवैस आदि का प्रशिक्षण देकर एक समूह तैयार कर उनके माध्यम से इस कार्य को वृहद स्तर पर शुरू किया तथा तैयार किये गये उत्पाद लगभग दुगने होने लगे जिससे आय में वृद्धि हो गई और उन ग्रामीण अशिक्षित बेरोजगार महिलाओं को आय का जरिया प्राप्त हुआ साथ में उनकी आय में भी वृद्धि हुई।

कृषक प्रतिक्रिया—श्रीमती उमा अचार, मुरब्बा, जैम—जैली, स्कवैस का उत्पादन कर रही हैं जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है एवं परिवार का पालन पोषण सही चल रहा है। इसके अतिरिक्त 0.5 हे० खेती से अच्छा लाभ कमा रही हैं तथा इस उद्योग के लिये कच्चा माल भी प्राप्त हो जाता है जिससे उनका परिवार सामाजिक, शैक्षिक, एवं आर्थिक रूप से आगे बढ़ रहा है।



पोषण वाटिका, पशुपालन एवं मशरूम से आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्रीमती मिथिलेश देवी
पिता/पति का नाम	:	श्री रामदास
ग्राम	:	खुदलापुर
विकास खण्ड	:	जलालाबाद
जनपद	:	कन्नौज
मोबाइल नंबर	:	98853566399



श्रीमती मिथिलेश देवी एक 45 वर्षीय उन्नतशील कृषक महिला हैं। वर्ष 2019-20 में उनके पास एक भैंस थी और वह घर के पीछे 50 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में परिवार के उपयोग हेतु सब्जी उत्पादन का कार्य कर रही थी, जिससे कुल शुद्ध आय रु0 39675 प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण : श्रीमती मिथिलेश देवी कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आई। कृषि कार्यों में उनकी अभिरुचि व नेतृत्व की क्षमता को देखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा उनके नेतृत्व में ग्राम खुदलापुर में एक कृषक हितार्थ समूह का गठन किया गया। समूह को पोषण वाटिका तकनीक, भैंस व बकरी पालन की वैज्ञानिक तकनीक एवं ढींगरी मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण दिया गया व प्रदर्शनों का आयोजन भी किया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त प्रदर्शन के तौर पर 2 किलो स्पॉन से मिथिलेश देवी द्वारा ढींगरी मशरूम उत्पादन की तकनीक भी सीखी गई।



तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय-व्यय का विवरण : वर्ष 2022-23 में पोषण वाटिका द्वारा सब्जी उत्पादन से अधिक लाभ हेतु प्राकृतिक विधि से सब्जी उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण व प्रदर्शनों का आयोजन किया गया तथा 3 भैंसों तथा 3 बकरियों के पालन के साथ ही 2 किलो स्पान से ढींगरी मशरूम उत्पादन का कार्य आरम्भ किया। वर्ष 2022-23 में उनके द्वारा पोषण वाटिका में जैविक सब्जी उत्पादन के साथ केचुआ खाद तैयार करने का कार्य भी आरम्भ किया गया था। वर्ष 2023-24 में केचुआ खाद उत्पादन के साथ ही प्राकृतिक विधि से पोषण वाटिका में सब्जी उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात उनके द्वारा जैविक व प्राकृतिक विधि से सब्जी उत्पादन कर विक्रय किया जा रहा है। जिससे सब्जी उत्पादन की लागत कम होने से व सब्जी का उचित भाव मिलने से पोषण वाटिका का मुनाफा भी बढ़ा है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीक/क्षेत्र विस्तार: गाँव की अन्य महिलाओं द्वारा भी पोषण वाटिका तैयार कर स्वयं के उपयोग हेतु सब्जियों का उत्पादन किया जा रहा है। आस पास के गाँव में वर्ष 2019-20 से वर्ष 2023-24 के बीच भैंस पालन व बकरी पालन व्यवसाय में भी बढ़ोतरी देखी गई है। आस-पास के गाँव नेकपुर कायस्थ, बहेलियनपुरवा व डिगसरा की महिलाओं द्वारा भी आय वृद्धि हेतु इसी प्रकार एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाया जा रहा है।



कृषक प्रतिक्रिया : सुनियोजित पोषण वाटिका, पशुपालन (भैंस एवं बकरी), एवं मशरूम उत्पादन के साथ ही वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन करके उपयोग के साथ अतिरिक्त विक्रय कर लाभ भी कमाया जा रहा है। पशुपालन से उपलब्ध गोबर द्वारा तैयार केंचुए की खाद, जैविक सब्जी उत्पादन कर अच्छा लाभ कमाने के लिये उपयोगी तकनीक है। यह मृदा स्वास्थ्य को बेहतर रखने में भी उपयोगी है।



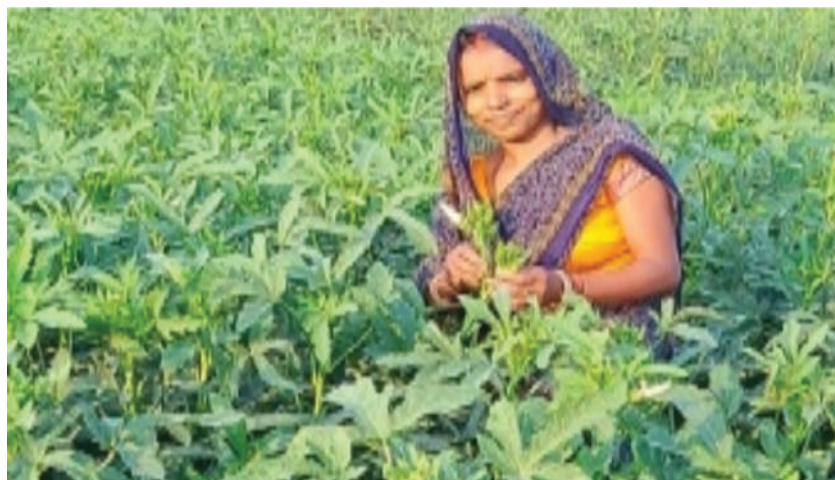
पोषण वाटिका एवं उन्नत तकनीक द्वारा आय वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्रीमती विमला देवी
पति का नाम	:	श्री मनोज कुमार
ग्राम	:	अतरथरिया
विकास खण्ड	:	सलोन
जनपद	:	रायबरेली
मोबाइल नंबर	:	7007355752



श्रीमती विमला देवी उन्नतशील कृषक महिला हैं। इनके परिवार की आय का मुख्य स्रोत खेती है जिससे वर्ष 2019-20 में लगभग ₹ 20,0000 तक की वार्षिक आमदनी होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण : श्रीमती विमला देवी कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आई। कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली द्वारा पोषण वाटिका प्रबन्धन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विमला देवी को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ सब्जियों की उन्नत प्रजाति के बीजों को भी दिया गया। इसके अतिरिक्त प्रक्षेत्र भ्रमण द्वारा विमला को समय-समय पर सम सामयिक जानकारीयों भी प्रदान की गयी।



तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय-व्यय का विवरण : वर्ष 2023-24 में पोषण वाटिका बनाने के उपरान्त उनके परिवार को बाजार से सब्जी खरीदने में होने वाले खर्च में बचत होने के साथ-साथ आवश्यकता से अधिक सब्जियों को बाजार में विक्रय कर लगभग ₹ 50,000 की अतिरिक्त वार्षिक आमदनी हुई, जिससे परिवार की कुल वार्षिक आय, ₹ 2,00,000 से बढ़कर ₹ 2,50,000 तक हो गयी।

कृषक प्रतिक्रिया : पोषण वाटिका लगाने के उपरान्त खाद्य विविधता के साथ-साथ पोषण स्तर में सुधार एवं परिवारिक आय वृद्धि से उनके आत्मबल में वृद्धि हुई और श्रीमती विमला ने गाँव की अन्य महिलाओं को भी पोषण वाटिका लगाने हेतु प्रोत्साहित किया।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : विमला की पोषण वाटिका को देखकर गाँव की अन्य 15 महिलाओं ने भी कृषि विज्ञान केन्द्र से पोषण वाटिका का प्रशिक्षण प्राप्त कर पोषण वाटिका स्थापित की।



पोषण वाटिका के साथ एकीकृत फसल प्रबन्धन उन्नति का साधन

कृषक का नाम	:	श्रीमती संतोष कुमारी
पति का नाम	:	श्री जोगराज सिंह
ग्राम	:	भदौरा
विकास खण्ड	:	सुल्तानगंज
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नंबर	:	7300819012



श्रीमती संतोष कुमारी 2020 के पूर्व पारम्परिक खेती के साथ कुछ जमीन पर हरी सब्जियाँ जैसे— लौकी, तरोई, भिण्डी आदि घर के उपयोग के लिए उगाती थीं। वर्ष 2020 के पूर्व मक्का—आलू तथा गेहूँ की खेती .02 हे० क्षेत्रफल पर करती थी जिससे उनको कुल वार्षिक आय ₹0 256107 प्राप्त होती थी तथा कुल लागत ₹0 127850 आती थी जिसे कुल आय में घटाने में ₹0 128257 का शुद्ध आय प्रतिवर्ष प्राप्त होती थी।



कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण : कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पोषक वाटिका प्रबंधन तथा एकीकृत फसल प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया, तत्पश्चात् 500² मी० पर पोषण वाटिका स्थापित कराई गयी तथा क्यारियों की तैयारी से लेकर पोषक वाटिका सब्जियों की नवीन प्रजातियों के बीज उपलब्ध कराये गये तथा उचित फसल चक्र के बारे में भी बताया गया। एकीकृत फसल प्रबंधन प्रशिक्षण के अन्तर्गत मक्का, आलू, गेहूँ फसल चक्र के साथ अरबी तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों की खेती के बारे में विस्तृत जानकारी व नवीन प्रजातियों के बीज प्रदान किये गये।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्तमान में वह मक्का तथा आलू के अतिरिक्त अरबी एवं खीरा की उन्नति प्रजातियों की खेती कर रही हैं। जिस पर कुल वार्षिक लागत ₹0 162170 आती है तथा कुल वार्षिक आय ₹0 393034 प्राप्त हो रही है। इनकी शुद्ध वार्षिक आय ₹0 230664 है जो कि पूर्व वर्ष की तुलना में 80 प्रतिशत अधिक है।

अन्य कृषक महिलाओं/कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार : श्रीमती संतोष कुमारी की सफलता के उपरान्त भदौरा गॉव तथा आसपास के क्षेत्र के 18 कृषक महिलाओं/कृषकों द्वारा एकीकृत फसल प्रबन्धन के साथ पोषक वाटिका तकनीक को अपनाया गया है। जिससे अधिक आय प्राप्त हो रही है।



कृषक प्रतिक्रिया :

श्रीमती संतोष कुमारी

अपने पति तथा परिवार के साथ मिलकर पोषक वाटिका व एकीकृत फसल प्रबन्धन से प्राप्त आय के द्वारा अपना घर का खर्चा चलाती हैं। पोषक वाटिका लगाने से पूर्व परिवार में हरी सब्जियाँ औसतन 80—100 ग्राम/प्रति व्यक्ति/प्रतिदिन उपयोग की जाती थी किन्तु अब औसतन 200—220 ग्राम/प्रति व्यक्ति/प्रतिदिन उपयोग में लायी जाती हैं जिससे परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य में सुधार है और प्रतिवर्ष सब्जियों पर होने वाले ₹0 6000 के व्यय की बचत होती है जिसका उपयोग वह अपने बच्चों की शिक्षा व देख-रेख में कर रही हैं।



दुग्ध उत्पादन से आर्थिक उन्नयन

कृषक का नाम	:	श्रीमती रीता दुबे
पिता/पति का नाम	:	श्री विरेन्द्र दुबे
ग्राम	:	दुबे का पूर्वा
विकास खण्ड	:	भाग्यनगर
जनपद	:	औरैया
मोबाइल नंबर	:	9548510789



श्रीमती रीता दुबे वर्ष 2020 में दो सामान्य भैंसों के साथ दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय करती थी जिस महीने में 330 लीटर दूध प्राप्त होता था जिसका मूल्य 14850 रुपए प्राप्त होते थे जिसमें प्रति माह 9360 रुपए का व्यय होता था एवं शुद्ध आय प्रति महीने 5490 रुपए प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण : श्रीमती दुबे ने 2021 में कृषि विज्ञान केन्द्र एवं राजकीय फल संरक्षण केन्द्र, औरैया के तत्वाधान में 1 महीने का प्रशिक्षण प्राप्त किया जिसमें दुग्ध द्वारा निर्मित उत्पाद जैसे खोया, पनीर, घी आदि बनाने, प्रबन्धन एवं मार्केटिंग के बारे में जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् वर्ष 2021 में गोपाल डेयरी उद्योग नाम से डेयरी उत्पादों की बिक्री का व्यवसाय प्रारम्भ किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : श्रीमती रीता दुबे ने अपने तीन जानवरों दो भैंस (मुरा) एक गाय से 35 लीटर दूध उत्पादन के अलावा 200 लीटर दूध प्रतिदिन क्रय करना आरंभ किया जिससे खोया, पनीर, घी का निर्माण किया एवं प्रति माह 1500 किलोग्राम पनीर, खोवा, एवं घी की बिक्री आरम्भ की जिससे उन्हें रु0 540000 की आय प्राप्त हुई जिसमें 430000 का व्यय हुआ जिससे शुद्ध आय रु0 110000 प्रति माह रही।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्रीमती दुबे की सफलता के उपरान्त क्षेत्र के अन्य 3 कृषक महिलाएं भी इस क्षेत्र को व्यवसाय के रूप में अपना रही हैं।



कृषक प्रतिक्रिया : श्रीमती दुबे पति श्री विरेन्द्र कुमार दुबे एवं परिवार के साथ मिलकर गोपाल डेयरी उद्योग को सफलता पूर्वक संचालित कर रही हैं एवं अधिक लाभ लेने के साथ ही साथ अपने नजदीकी कस्बा (दिबियापुर) में भी दुकान लेकर अपने व्यवसाय को और विस्तारित रूप से संचालित कर रही हैं। श्रीमती दुबे को देखकर गाँव की अन्य महिलाएं भी उनके कार्य से प्रभावित हैं।



बेमौसम सब्जी एवं फल उत्पादन से आर्थिक समृद्धि

कृषक का नाम	:	श्रीमती मोना
पति का नाम	:	श्री जितेन्द्र कुमार
ग्राम	:	अड्डा नावली
विकास खण्ड	:	बसरेहर
जनपद	:	इटवा
मोबाइल नंबर	:	6398406197



श्रीमती मोना एक लघु सीमान्त कृषक महिला हैं जिनके पास मात्र 0.18 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। वर्ष 2019 के पूर्व तक धान व गेहूँ की पारंपरिक खेती करती थीं, जिसमें लागत निकाल कर उनकी कुल आय मात्र ₹0 25000 से 30000 तक थी। परिवार का खर्चा चलाना उनके लिए काफी मुश्किल होता था। वर्ष 2019 में उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, इटावा व अन्य विभागों से सम्पर्क किया व तकनीकी प्रशिक्षण भी लिया। इसके बाद उन्होंने अपने परिवार के खाने योग्य पोषण वाटिका तैयार की जिससे ताजी सब्जी खाने को मिली व अतिरिक्त सब्जी बेचकर धन अर्जित किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तान्तरण : सब्जी व फलों को उगाने हेतु उनकी जिज्ञासा व इच्छाशक्ति बढ़ती गई। इस बात को ध्यान में रखकर कृषि विज्ञान केन्द्र इटावा के मार्ग दर्शन में वर्ष 2019-20 में बेमौसम सब्जी उत्पादन का कार्य लो टनल पाली हाउस में पौध तैयार करके खेतों में मल्टिपल तकनीक द्वारा शुरू किया। इस तकनीक से फसल काफी अच्छी हुई। बेमौसम में फूल गोभी 40 से 60 रु प्रति किलो बेचकर काफी अच्छा मुनाफा प्राप्त किया। अब वह पूर्ण रूप से वैज्ञानिक पद्धति द्वारा बेमौसम की सब्जी जैसे-तरबूज, खरबूज, करेला, खीरा का उत्पादन करती हैं। बाजार में बेचकर अपनी आय में वृद्धि की व अपना व अपने परिवार का आर्थिक स्तर भी मजबूत किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2018-19 से पूर्व वो धान व गेहूँ की फसल लेती थीं जिसमें लागत निकाल कर उनकी कुल आय मात्र ₹0 30000 तक थी। वर्ष 2019-20 से बेमौसम सब्जी उत्पादन में काफी अच्छा फायदा हुआ है। बेमौसम सब्जी उत्पादन से श्रीमती मोना प्रति वर्ष ₹0 400000 की कुल आय प्राप्त कर रही हैं तथा उनका प्रतिवर्ष कुल खर्च ₹0 120000 है। इस प्रकार श्रीमती मोना प्रतिवर्ष ₹0 280000 की शुद्ध आय प्राप्त कर रही हैं।



अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्रीमती मोना की सफलता के उपरान्त क्षेत्र की अन्य 4 कृषक महिलाएं भी इस क्षेत्र को व्यवसाय के रूप में अपना रही हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : श्रीमती मोना एवं परिवार के साथ मिलकर अधिक लाभ लेने के साथ ही साथ नजदीकी गाँव की अन्य महिलाएं भी उनके कार्य से प्रभावित हैं।



खेती के साथ पशुपालन से आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	:	श्री महताब सिंह
पिता/पति का नाम	:	:	श्री जोरावर सिंह
ग्राम	:	:	नगला बूढ़ा
विकास खण्ड	:	:	भरथना
जनपद	:	:	इटवा
मोबाइल नंबर	:	:	9012034690



श्री महताब सिंह के पास मात्र 0.8 हे० खेती थी, बाजार में उपलब्ध पारम्परिक बीजों का प्रयोग करते थे साथ ही साधारण नस्ल के पशुओं को पालने का कार्य करते थे। जिससे प्रति वर्ष उनको खेती एवं साधारण नस्ल की भैंसों से रू० 63900 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी

हस्तान्तरण : श्री महताब सिंह, कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आए तथा उन्नतशील बीजों तथा आधुनिक विधि से पशुपालन एवं खेती पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के उपरान्त वर्ष 2019-20 से लगातार उन्नतशील बीजों के प्रयोग एवं उन्नतशील नस्लों के पशुओं को पालने पर जोर दिया गया। उन्नतशील प्रजातियों के प्रदर्शन, परीक्षण एवं प्रक्षेत्र दिवस इनके प्रक्षेत्रों पर कराये गये। जिनके परिणामों को देखकर इन्होंने इन तकनीकों को अपनाना शुरू किया तथा उन्नत नस्ल की 5 पशुओं को पालना शुरू किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : उन्नतशील बीजों एवं नई प्रजातियों एवं तकनीकों के प्रयोग से एवं उन्नतशील नस्लों की पाँच भैंसों के पालन से वर्ष 2023-24 में उनकी कुल शुद्ध आय रू० 63900 से बढ़कर रू० 171700 हो गयी है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार : श्री महताब सिंह ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढ़ोतरी करने के उपरान्त आस-पास के लगभग 12 कृषकों को पशुपालन हेतु प्रेरित किया। जिससे आस-पास के किसान लाभान्वित हुये।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक श्री महताब सिंह द्वारा अवगत कराया गया कि उन्नतशील बीजों के प्रयोग व उन्नतशील नस्लों के पशुओं के पालने से उनकी आय में वृद्धि हुई है।



मशरूम उत्पादन लाभ का साधन

कृषक का नाम	:	श्रीमती रेनू
पिता/पति का नाम	:	श्री जयपाल
ग्राम	:	रघुनाथपुर
विकास खण्ड	:	हसवा
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नंबर	:	8840094269



श्रीमती रेनू ने वर्ष 2019-20 से मशरूम की खेती प्रारम्भ की। प्रथम वर्ष में 10-12 कुन्तल मशरूम का उत्पादन प्राप्त किया जिसमें शुद्ध लाभ ₹0 540000 प्राप्त हुआ। साथ ही अपनी खेती में सहयोग किया तब से लगातार मशरूम की खेती कर रही हैं। परन्तु उचित बाजार मूल्य न मिलने के कारण अच्छी आमदनी प्राप्त नहीं हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्रीमती रेनू कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आई। वैज्ञानिकों के सहयोग से मशरूम की ग्रेडिंग एवं मार्केटिंग हेतु तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत उन्हें वर्ष 2021-22 में मशरूम का गुणवत्तायुक्त स्पान (बीज) विश्वविद्यालय से दिलाया गया, जिससे उनके मशरूम उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2023-24 में मशरूम उत्पादन हेतु श्रीमती रेनू द्वारा 7 शेड तैयार किये गये। साथ ही मशरूम उत्पादन कर लाभ कमाने हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आधुनिक तकनीकी प्रदान की गयी जिससे वर्ष 2019-20



में जो शुद्ध आय ₹0 540000 थी वह वर्ष 2023-24 में बढ़कर ₹0 1725000 हो गयी है। साथ ही अरबी, सब्जी, मटर, आलू तथा लहसुन की खेती से ₹0 109000 की आय भी प्राप्त कर रही है जो कि पूर्व की तुलना में बहुत अधिक है।

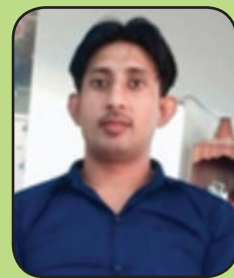
अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार : श्रीमती रेनू के फार्म पर 150 से अधिक कृषक, नवयुवक प्रशिक्षण प्राप्त कर मशरूम के उत्पादन का कार्य कर रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया : श्रीमती रेनू का कहना है कि कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़कर जो तकनीकी गलतियां होने से मशरूम में गुणवत्ता नहीं आ रही थी अब बिना दाग के सफेद मशरूम होने से बाजार में बिक्री ज्यादा दाम पर हो रही है। जिससे अत्यधिक लाभ प्राप्त हो रहा है और अन्य नवयुवक इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हो रहे हैं।



पशुपालन से कृषक की बढ़ी आमदनी

कृषक का नाम	: श्री शशांक यादव
पिता/पति का नाम	: श्री महेश चन्द्र
ग्राम	: नगला चिरोंजी
विकास खण्ड	: फिरोजाबाद
जनपद	: फिरोजाबाद
मोबाइल नंबर	: 9719521424



श्री शशांक यादव ग्राम—नगला चिरोंजी विकास खण्ड फिरोजाबाद, जनपद—फिरोजाबाद वर्ष 2022 के पूर्व एक एकड़ खेती के साथ—साथ 1 गाय तथा 1 भैंस का पालन करते थे। जिससे इनकी शुद्ध आय रु0 71300 प्रति वर्ष थी एवं परिवार का भरण पोषण करना कठिन था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी

हस्तान्तरण : श्री शशांक यादव वर्ष 2022 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फिरोजाबाद के सम्पर्क में आये तथा उन्होंने वहाँ पर विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किये। तत्पश्चात् उन्होंने केन्द्र से व्यावसायिक डेयरी फार्मिंग पर सात दिवसीय प्रशिक्षण लिया जिसमें पशु आहार, पशु प्रबंधन, आवास प्रबंधन, नस्ल प्रबंधन, बॉझपन एवं बीमारियों का प्रबंधन आदि प्रमुख विषय थे। उसके पश्चात् श्री यादव ने कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी सहयोग से डेयरी फार्मिंग का व्यवसाय 06 दुधारू पशुओं (04 मुर्गा भैंस एवं 02 जर्सी गाय) के साथ प्रारंभ किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : वर्ष 2022 के पूर्व इनके पास कुल 2 पशु थे जिससे इनको कुल रु0 71300 की शुद्ध आय प्रतिवर्ष प्राप्त होती थी। डेयरी फार्मिंग के पश्चात् वर्ष 2023—24 में इनको कुल दुग्ध उत्पादन 23560 लीटर प्राप्त हुआ जिसको बाजार में रु0 55 प्रति लीटर की दर से बेचने पर कुल आय रु0 1295800 प्राप्त हुई जबकि पशुपालन पर वर्ष भर का कुल व्यय रु0 693500 था। इस प्रकार इनको प्रतिवर्ष रुपये 602300 की शुद्ध आय प्राप्त हुई जो की पूर्व की तुलना में बहुत अधिक थी।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी / क्षेत्र विस्तार : श्री यादव ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढ़ोतरी करने के उपरान्त आस—पास के लगभग 17 कृषकों को डेयरी व्यवसाय हेतु प्रेरित किया। जिससे आस—पास के किसान लाभान्वित हुये।

कृषक प्रतिक्रिया : श्री यादव अपने परिवार के साथ एक सफल डेयरी फार्मिंग के साथ—साथ एक एकड़ खेती कर रहे हैं। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है एवं परिवार का भरण पोषण हो रहा है।



पशुपालन से समृद्ध हुआ किसान

कृषक का नाम	:	श्री अवधेश कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री नत्थू लाल
ग्राम	:	नगला पत्तू
विकास खण्ड	:	भरथना
जनपद	:	इटावा
मोबाइल नंबर	:	9536836407



श्री अवधेश कुमार ग्राम—नगला पत्तू विकास खण्ड भरथना, जनपद—इटावा वर्ष 2019—20 से पहले 0.8 हे० खेती के साथ—साथ एक साधारण नस्ल की भैंस का पालन करते थे। श्री कुमार बाजार में उपलब्ध साधारण बीजों का प्रयोग करते थे। जिससे इनकी शुद्ध आय ₹0 40800 प्रति वर्ष थी एवं परिवार का भरण पोषण करना कठिन था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण : श्री अवधेश कुमार वर्ष 2020 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा उन्होंने उन्नतशील खेती, नई प्रजातियों एवं तकनीकियों का प्रशिक्षण केन्द्र से प्राप्त किया साथ ही आधुनिक विधि से पशुपालन पर प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। उनके प्रक्षेत्रों पर नई प्रजातियों के बीजों का प्रदर्शन कराया गया जिसके परिणामों को देखकर इन्होंने इन तकनीकों को अपनाना शुरू किया। साथ ही पशुओं में नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गृभाधान भी कराया गया एवं उन्नतशील पशुओं की नस्लों के पालन हेतु प्रेरित किया गया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण : तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त

उन्नतशील प्रजातियों एवं बीजों को अपनाने एवं उन्नत नस्ल की भैंसों के पालन से उनकी शुद्ध आय ₹0 91800 हो गयी है जो पूर्व की तुलना में ₹0 51000 अधिक है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/ क्षेत्र विस्तार : श्री अवधेश कुमार ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार करने के उपरान्त आस—पास के लगभग 11 कृषकों को डेयरी व्यवसाय हेतु प्रेरित किया। जिससे आस—पास के किसान लाभान्वित हुये।

कृषक प्रतिक्रिया : कृषक श्री अवधेश कुमार द्वारा अवगत कराया गया कि उन्नतशील बीजों के प्रयोग

व उन्नतशील नस्लों के पशुओं के पालने से उनकी आय में वृद्धि हुई है।



किसानों के कल्याण हेतु योजनाएं:

किसानों के कल्याण/आय बढ़ाने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाएं –

प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान)	इस योजना के तहत, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) मोड के माध्यम से देश भर के किसान परिवारों के बैंक खातों में तीन बराबर चार-मासिक किस्तों में प्रति वर्ष 6000 रुपये का वित्तीय लाभ हस्तांतरित किया जाता है।
प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना (पीएम-केएमवाई)	18 से 40 वर्ष की आयु के आवेदकों को 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक 55 रुपये से 200 रुपये प्रति माह के बीच अंशदान करना होगा। 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद नामांकित किसानों को 3,000 रुपये मासिक पेंशन प्रदान करता है।
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई)	किसानों को बुवाई से पहले से कटाई के बाद तक सभी गैर-रोकथाम योग्य प्राकृतिक जोखिमों के खिलाफ फसलों के लिए व्यापक जोखिम कवर सुनिश्चित करने और पर्याप्त दावा राशि प्रदान करने के लिए एक सरल और सस्ती फसल बीमा उत्पाद प्रदान किया जा सके।
संशोधित ब्याज अनुदान योजना (MISS)	ब्याज अनुदान योजना (आईएसएस) फसल पालन और पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन जैसी अन्य संबद्ध गतिविधियों में लगे किसानों को रियायती अल्पावधि कृषि ऋण प्रदान करती है।
कृषि अवसंरचना कोष (एआईएफ)	इस योजना के तहत बैंकों और वित्तीय संस्थानों द्वारा 3% प्रति वर्ष की ब्याज छूट के साथ 1 लाख करोड़ रुपये ऋण के रूप में प्रदान किए जाएंगे और 2 करोड़ रुपये तक के ऋण के लिए CGTMSE के तहत ऋण गारंटी कवरेज दिया जाएगा।
एफपीओ का गठन और संवर्धन	भारत सरकार ने वर्ष 2020 में "10,000 किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के गठन और संवर्धन" के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना (सीएसएस) शुरू की।
राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम)	मधुमक्खी पालन के महत्व को ध्यान में रखते हुए, वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन के समग्र प्रचार और विकास तथा मीठी क्रांति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्षेत्र में इसके कार्यान्वयन के लिए 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन (एनबीएचएम) नामक एक नई केंद्रीय योजना शुरू की गई।
बाजार हस्तक्षेप योजना और मूल्य समर्थन योजना (एमआईएस-पीएसएस)	कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय दलहन, तिलहन और खोपरा की खरीद के लिए मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) लागू करता है।
नमो ड्रोन दीदी	महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) को ड्रोन उपलब्ध कराना है। 1261 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ 2024-25 से 2025-26 की अवधि के लिए। इस योजना का उद्देश्य 15000 चयनित महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को कृषि उद्देश्य के लिए ड्रोन उपलब्ध कराना है।



